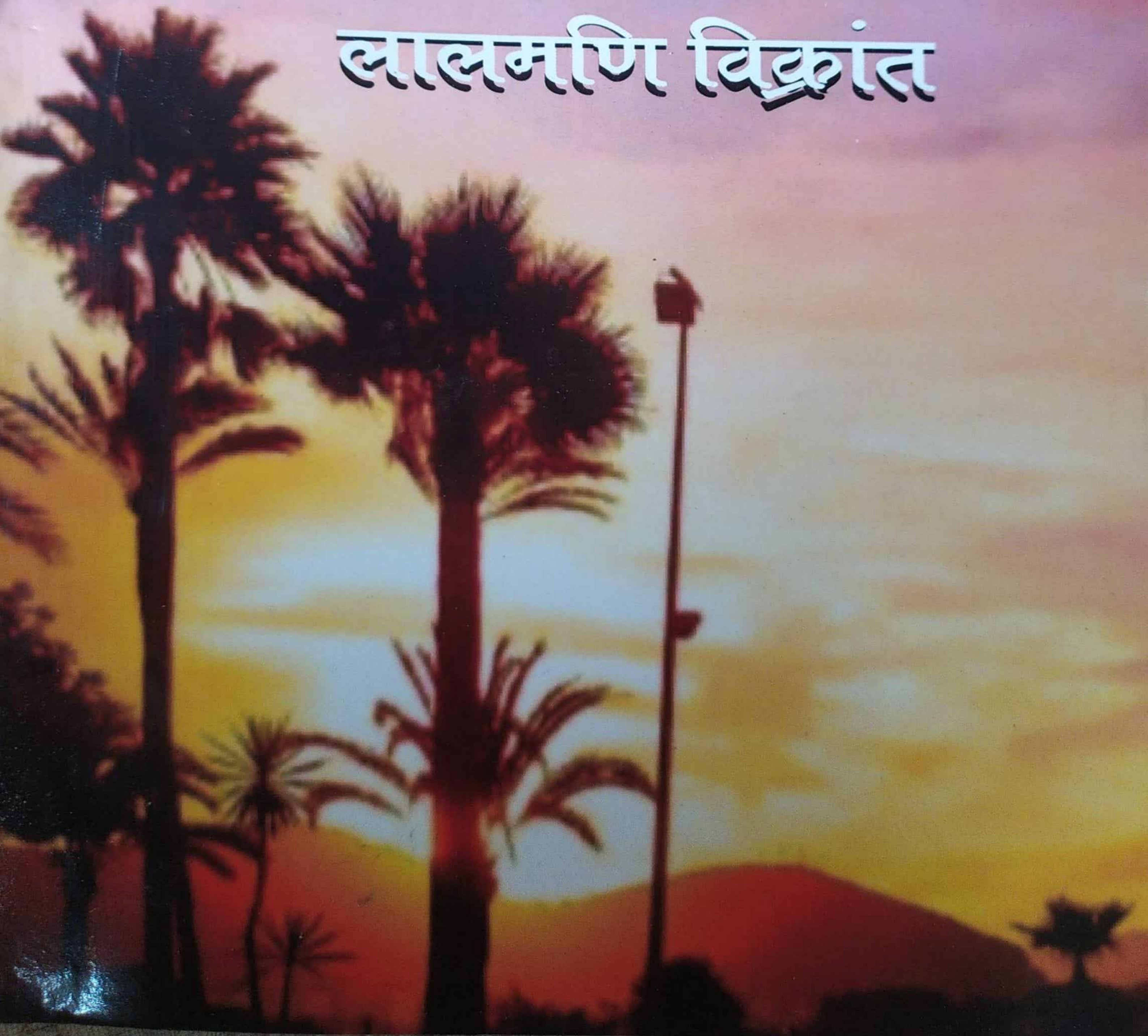
आधुनिक मगही व्याकरण

लालमणि विक्रांत



आधुनिक मगही व्याकरण

लालमणि विक्रांत

प्रकाशन

जिज्ञासा प्रकाशन (ओ.पी.सी.) प्रा. लि.
ई-८६, स्वर्ण जयंती पुरम,
ग़ाज़ियाबाद -२०१००२ (उ.प्र.)

JIGYASA PRAKASHAN (OPC) PVT. LTD.
E-86, SWARN JAYANTI PURAM, GHAZIABAD-201002 (U.P.)

CONTACT

Whatsapp - 8810598485
Call - 9958426855
E-Mail - jigyasaprakashan2019@rediffmail.com
Website - htpp://jigyasaprakashan.com

PRINTERS

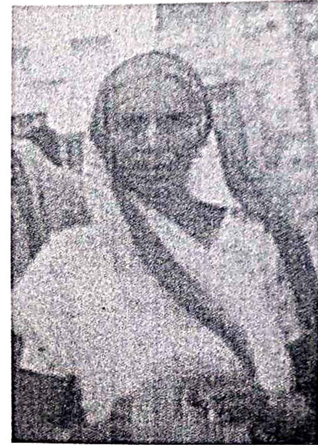
Nidhi Printers Ghaziabad-201 002 (U.P)

ISBN – 978-93-93554-05-5

प्रथम संस्करण :२०२२
मूल्य- रु.२५०/-

Title – Aadhunik Magahi Vyakaran
Written by – Lalmani Vikrant
Price – Rs.250/-

समर्पण



हम्मर मैया जे हमरा जनम देलन अउर जिनकर छत्रछाया में जिनगी के धरती पर अप्पन पहचान स्थापित कर सकलऊँ, उनकरे सादर समर्पित।

— लालमणि विक्रान्त।

सम्मति



श्री लालमणि विक्रान्त द्वारा लिखल कृति 'आधुनिक मगही व्याकरण' मगही भाषा के विकास अउ ओकर समृद्धि में मील के पत्थर साबित होत, ई हमरा विश्वास है। आज हम सब मगही भाषा के भारतीय संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल करावे ला व्यग्र ही, ओकरा ला पहले हमरा मजबूत प्लेटफॉर्म तैयार करे के जरूरत हे ताकि छितराल/ विखंडित मगहियन भाई सबके एकजुट करल जा सके। राजनीति के द्वार यहीं से खुले हे।

हमरा ई भी दृढ़ विश्वास हे कि उक्त पुस्तक मगही के मानकीकरण में टार्च लाईट के भूमिका अदा करत। सधन्यवाद।

– डा ओमप्रकाश जमुआर
पूर्व सहायक निदेशक
दूरदर्शन केन्द्र, पटना
चलभाष संख्या : 8709542267

सम्मति



मगही भाषा के अस्तित्व मगह / मगध क्षेत्र में 9वीं - 10 वीं शती से मिलऽ हे। आज भी बिहार के मगध क्षेत्र यानी पटना, गया, नालन्दा, नवादा, जहानावाद, औरंगाबाद, अरवल, शेखपुरा, लखीसराय, जमुई के साथ- साथ झारखंड के हजारीबाग, चतरा, रामगढ़, कोडरमा अउ गिरिडीह में कुछ हेर- फेर के साथ ई क्षेत्र के मुख्य जनभाषा हे। किन्तु एक मानक रूप नञ रहे के चलते मगही के कई गो उपभेद हो गेल हे। झारखण्ड क्षेत्र में मगही से निकलल खोरठा एकर ज्वलंत उदाहरण हे। मगही के प्रख्यात साहित्यकार लालमणि विक्रांत जी मगही के मानक रूप खातिर 'आधुनिक मगही व्याकरण' लिखलथ हे। ई उनकर एकदम सराहनीय कार्य हे। ई महत्तर साहित्यिक काम ला आदरणीय लालमणि विक्रान्त जी के लाख- लाख बधाई हे।

–डॉ. विजय कुमार सन्देश
पूर्व अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
मार्खम कॉलेज, हजारीबाग, 82530
झारखण्ड

सम्मति



भाषा समाज के रूप होवऽ हे। रूपवान व्यक्ति अउर रूपवान समाज के सबसे पहिला लक्षण होवऽ हे भाषा के शुद्धता। सब प्रतिभावान साहित्यकार अप्पन-अप्पन रचना करइ में लीन हथिन कि कइसों मगही के पुरनका गौरवशाली इतिहास के फेर से लोग के सामने लावल जाय बकि सब लोग के सामने इहे समस्या हल कि मगही के शुद्ध रूप में लिखइ ले, पढ़इ ले अउ बोलइ ले मानक व्याकरण के कोय पुस्तक नञ हल।

आदरणीय लालमणि विक्रांत जी के सिरजल 'आधुनिक मगही व्याकरण' नऽ केवल मगही भाषा के शुद्ध रूप में प्रस्तुत करे में बड़ योगदान देत बकि मगही समाज के सही दिशा में ले जाय में बहुते मददगार साबित होता। मगही साहित्यकार के शुद्ध रूप में रचना प्रस्तुत करे में बड़ उपयोगी सिद्ध होवत।

– स्वामी प्रेम प्रणव

युवा मगही कवि

विलींगटन (न्यूजीलैंड)

सम्मति



लालमणि विक्रांत मगही आउ मगहिया खातिर समर्पित व्यक्तित्व के नाम हइ। ई पिछला लगभग दू-तीन दशक से मगही खातिर एकदम तत्पर, सजग आउ समर्पित हथ। प्रायः व्यवहार में देखल जा हइ कि रचनाकार या तो कविता में अपन अधिकार रखऽ हथ या गद्य में। कभी-कभी कोई-कोई रचनाकार काव्य आउ गद्य, दन्नु में अपन समान अधिकार से लिखऽ हथ। बाकि एकरा से अलग व्याकरण एगो अइसन क्षेत्र हइ जहां सबके पहुंच संभव न हइ। पढ़े आउ समझे तक तो व्याकरण ठीक हइ। बाकि एगो पूर्ण व्याकरण लिखना ऊ भी मगही भाषा के स्थिरता, मानकता आउ विकास खातिर। ई विलक्षण बात हइ। बहुत दिन से मगही आउ मगहिया खातिर एगो व्याकरण के आवश्यकता हलइ। लालमणि विक्रांत जी ई कमी के पूरा कइलका। निश्चित रूप से भविष्य में ई व्याकरण एगो "मील के पत्थर" साबित होतइ। कहल जा हइ "साहित्य समाज के दर्पण हइ" काहेकि समाज के विभिन्न वर्ग आउ वर्ण के साफ सुथरा छवि यानी चित्रण कहीं उपलब्ध हइ तो ऊ साहित्य में बाकि अपन भाव के पूर्ण अभिव्यक्ति खातिर एगो भाषा चाही आउ भाषा खातिर एगो व्याकरण जे भाषा के पूर्ण रूप से अनुशासित कर सके। ई व्याकरण लिखे के महती कार्य पूर्ण कइलका लालमणि विक्रांत जी।

छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' अपन रचना-काल में कविता के 'छंद के बधंन' से मुक्त कइलका। ई तर्क के साथ कि भाव के अभिव्यक्ति खातिर बधंन आवश्यक न हइ। छंद के बंधन से कविता के दम घुटऽ हइ। कविता तक तो ई

तर्क ठीक हे बाकि गद्य खातिर व्याकरण जरूरी हइ। जइसन अनभूति ओइसन अभिव्यक्ति भी ठीक हइ। बावजूद एकर गद्य में व्याकरण अति आवश्यक हइ। व्याकरण के बिना भाषा अनियंत्रित हो जा हइ। मगहिया लेखक ला अनभूति और अभिव्यक्ति भी पूर्ण रूप से होवे के चाही बाकि पूर्ण मानकता के साथ । मगही भाषा के मानक रूप देवइत हथ अपन व्याकरण के माध्यम से लालमणि विक्रांत जी। लालमणि विक्रांत जी के बहुत-बहुत धन्यवाद। मगही के विकास के खातिर बहुत बढ़िया प्रयास। हमर विश्वास हइ कि ई संकरण में जे कमी होतइ ऊ अगला संस्करण में पूर्ण रूप से सही हो जइतइ आउ ई व्याकरण अपन पूर्णता में सुन्दरता के साथ छपतइ।

धन्यवाद।

डॉ0 अनिल कुमार

केंद्रीय विद्यालय, राँची

झारखण्ड।

——: हम्मर अभिमत:——

भरोपीय भाषा परिवार के भाषा मगही मगध के बड़ पुरान भाषा हे। बहुत पहिले मगध के भाषा के मागधी कहल जा हल बकि उहे मागधी के विकसित रूप के आजकल मगही कहल जा हइ। मगही मगध सम्राट जरासंध के भाषा हे। गौतम बुद्ध अउ वर्द्धमान महावीर के धर्म प्रचार के भाषा हे।सम्राट अशोक के समय में मगही मगध साम्राज्य के राजभाषा भी रहल। मगही सिद्ध सरहपा के भाषा हे। ई मगही बिहार प्रान्त के गया, नालंदा, पटना, नवादा, औरंगाबाद, जहानावाद, अरवल, शेखपुरा, लखीसराय, जमुई जिला में बोलल जा हइ । इहे तरह झारखंड प्रान्त के हजारीबाग, पलामू, चतरा, कोडरमा, जामताड़ा, बोकारो, धनबाद, गिरिडीह जिला मगही भाषी जिला हे। बंगाल के मालदा, चौबीस परगना जिला में भी मगही बोलल जा हइ। उड़ीसा प्रान्त के मयूरभंज, राउरकेला, कोयम्बर झूरी जिला मगही भाषी हे। छत्तीसगढ़ प्रान्त के यशपुर जिला अउ नेपाल देश के सरलाही, महोत्तरी, सिरहा, धनुषा, सप्तारी, मोरांग अउ झापा नाम के जिला में मगही बोलल जा हइ।एकर अलावे लंका अउ मारीसस में भी मगही भाषी मिल जइथुन । ई तरह मगही भाषा एगो बड़गो भू- भाग के भाषा हे ।

मगही भाषा के साहित्य के बड़ पुराना इतिहास हे। आज भी मगही भाषा में साहित्य सृजन धड़ल्ले से होवइत हे। साहित्य के सभे विधा के मगही साहित्यकार हथ। आधुनिक काल के मगही साहित्य अप्पन समृद्धि के पताका फहरा रहल हे। एकरा में महाकाव्य, खंडकाव्य, उपन्यास, कहानी, लघुकथा जोर पकड़ले हे ।

मगही के अप्पन शब्दकोश भी हे। मगही में पहिला महाकाव्य दलेल सिंह के 'रसार्णव' (1813), ओकर बाद 1880 में हरिनाथ पाठक के 'ललित रामायण' फिन महाकवि योगेश्वर प्रसाद सिंह 'योगेश' जी के 1960 में 'गौतम' महाकाव्य प्रकाशित होलन । एकर बाद प्रोफेसर मुचकुन्द शर्मा भी मगही में मैया कमला, अहिल्या, ययाति, कर्ण, सुमित्रा, कच देवयानी, मगही रामायण नाम के सात महाकाव्य लिखलन। एकर बाद 2021 में लालमणि विक्रान्त के सिद्ध सरहपा, चन्द्रगुप्त मगही महाकाव्य के सिरजन होलइ ।

मगही मे सबसे पहिला उपन्यास जयनाथपति के 'सुनीता' 1928 मे प्रकाशित होलइ। इहे तरह मगही के पहिला नाटक 'अवधूत' मानल गेल अउर एकर बाद श्रीकान्त शास्त्री के नया गाँव (नाटक), बाबूलाल मधुकर के नयका भोर (नाटक) के नाम आवे हे। मगही मे अनुवाद अनन्त कुमार मिश्र 1828 मे' नासिकेतोपाख्यान' संस्कृत से मगही मे सिरजलन जेकर प्रकाशन बहुत बाद मे प्रेसीडेंसी कॉलेज, कलकत्ता से होलइ। 1882 में विदेशी विद्वान ग्रियर्सन तिब्बती भाषा से मगही में 'गोपीचन्द' के अनुवाद कइलन।

मगही व्याकरण के काम कई ठो विदेशी विद्वान कइलन जिनकरा में ग्रियर्सन, हार्वले अउर पिशेल के नाम प्रमुख हे। फिन सम्पत्ति अर्यानी भी मगही व्याकरण ला निम्मन काम कइलन। एकर बाद राजेन्द्र कुमार यौधेय के मगही व्याकरण 1956 में छपलन। शेखपुरा जिला के गड़वा गाँव निवासी डाक्टर युगेश्वर के भी मगही भाषा नाम से मगही व्याकरण प्रकाशित होलइ। अउर कत्ते लोग मगही व्याकरण पर अप्पन शोध कार्य कइलन । एकर बाद भी मगही व्याकरण ला "आधुनिक मगही व्याकरण" के अपेक्षा बनल हे। जब हमरा आज के परिवेश में मगही व्याकरण के जरूरत महसूस होवऽ हे अउ कुछ मगही प्रेमी एकर संबंध में जानकारी मांगलन तऽ हम' आधुनिक मगही व्याकरण' ला कलम उठइलऊँ।

हरेक दस कोस पर कोय भी भाषा के रूप बदलऽ हे। मगही भी एकर अपवाद नञ हेमगही के सोलह तरह के रूप भिन्न-भिन्न क्षेत्र में प्रचलित हे बकि शिक्षा जगत के मगही सभे क्षेत्र खातिर एक्के तरह के रहताइहे विचार मगही के विकास के गति देवत अउ मगही साहित्य के विश्वव्यापी बनवे में कारगर होवत।

पचास बच्छर पहिले के मगही अउर आज के मगही लिखइ में बहुते अन्तर आ गेलइ। आज के साहित्यकार जे मगही लिख रहलन, ऊ आज के मगही आधुनिक मगही हे। तेजी से मगही भाषा नया रूप ग्रहण करइत हे । हम अप्पन किताब 'आधुनिक मगही व्याकरण' में इहो बात पर प्रकाश डालइ के मन बनइले ही।

मगही मगध साम्राज्य के राजभाषा रहल जेकर इतिहास गवाह हे।तहिया मगध के विस्तार देशव्यापी तऽ हल बकि विश्व व्यापी भी हला फिन एकर प्रयास शुरू हो गेल हे। आज मगही के कार्यक्रम में देश-विदेश से लोग जुड़ रहलन । एकरा में साथ आवऽ।

आज के कुछेक मगही साहित्यकार मगही के कूपमण्डूक बनाके रखे के फेर में हथ। ऊ तऽ मगही भाषा के रूप संवारे के बदले बिगाड़े में लगल हथ। मगही के वर्तनी के मानकीकरण के बात ओहनी के तनियों नञ सोहावे हे । ई तऽ सोचइ के बात हे कि हम अप्पन भाषा के रूप संवार नञ सकइ ही तो बिगाड़े के काम भी नञ करऊँ। मगही में हिन्दी के शब्द के प्रयोग करइ हऽ तऽ करऽ बकि ओकर रूप बिगाड़ के नञ लिखऽ। केकरो रूप बिगाड़इ के आदत ठीक नञ हे।

मगही के सुप्रसिद्ध विदुषी सम्पत्ति अर्यानी के सिरजल मगही व्याकरण के भी हम अध्ययन कलिअइ।अउ हम जे निष्कर्ष पर अइलिअइ ओकरे परिणाम हे हम्मर 'आधुनिक मगही व्याकरण '। एकर अलावे हमरा मगही भाषा- साहित्य के पत्रिका -- विहान, अलका मागधी, सारथी, मगही, सिरजन, सतत अउ मगही संवाद नाम के पत्रिका के देखे- समझे के औसर मिलइत रहल । सभे के गहन अध्ययन अउ आधुनिक परिवेश में मगही भाषा के व्यापक फलक देवे के जरूरत के ध्यान में रखके हम 'आधुनिक मगही व्याकरण' खातिर कलम उठइलिअइ।

आधुनिक व्याकरण के रचना में ई0 नारायण प्रसाद के अपेक्षित सहयोग हमरा मिलइत रहल। 1956 ई0 में प्रकाशित राजेन्द्र कुमार यौधेय जी के 'मगही व्याकरण' नारायण प्रसाद माँगते मातर पी0 डी0 एफ0 बनाके पुणे से भेज देलन। मगही व्याकरण संबंधी जानकारी भी नारायण प्रसाद उपलब्ध करवइत रहलन। हम ई0 नारायण प्रसाद के कृतज्ञ हिअइ कि उनकर सहयोग बिना आधुनिक मगही व्याकरण के रचना हमरा से संभव नञ हलइ।

मगही व्याकरण के किताब के नाम हम 'आधुनिक मगही व्याकरण' रखलिअइ ओकर ई कारण हे कि मगही भाषा जइसे आज से पचास साल पहिले लिखल जा हलइ ओकरा में बहुते बदलाव आ गेल। आज शब्द के वर्तनी बदलल हे, पहिलकवा नञ रहल। रोज जमाना बदल रहल हे तऽ मगही काहे नञ अप्पन रूप बदलत। ई तऽ सहज स्वाभाविक हे। आजकल के जे मगही के विद्वान हथिन ऊ शब्द के वर्तनी के रूप रोज- रोज सुधार रहलन हे। अउर बदलल वर्तनी के अप्पन औचित्य भी हे। लकीर के फकीर बनल रहना ठीक नञ।

हम अप्पन छात्र जीवन से आज तलक पढ़इत-पढ़वइत व्याकरण के जतना जान सकलऊँ, उहे आधार पर मगही के व्याकरण के किताब सिरजन ला कदम बढ़लऊँ। एक विद्यार्थी लागी जे जादे जरूरी हे, ओकरा पर हम्मर ध्यान केन्द्रित रहल। हम भाषा - साहित्य से जिनगी - भर जुड़ल रहलऊँ।

"आधुनिक मगही व्याकरण" के सिरजन के हम्मर उद्देश्य हे मगही भाषा के लेखन के एकरूपता। ओइसे तऽ जिनकरा जे बुझाय हे, करिये रहलथिन बकि मगही के उत्थान ला जरूरी हे मगही भाषा के लेखन के एकरूप बनवे में एक साथ आवऽ। अप्पन जबार के मोह छोड़ऽ। मगही से मोहब्बत करऽ।

हम्मर प्रयास केतना सार्थक हे ई तऽ समय बतइतइ बकि हम प्रयास करब कि मगही समाज के अपेक्षा के पूरा कर सकऊँ।

जय मगही। जय मगध।
जय विश्व मगही परिषद।

हार्दिक शुभकामना के साथ ----

लालमणि विक्रान्त
कोविद निवास, कैथावाँ
शेखपुरा (बिहार)
मो0 न0 : 9113434485

अनुक्रमणिका

क्रम शीर्षक **पृष्ठ संख्या**



आधुनिक मगही व्याकरण

मगही व्याकरण के कुछ नीति नियामक सच ----

(1) मगही भाषा में देवनागरी लिपि के सभे वर्ण के उपयोग करऽ।

(2) मगही भाषा में विकारी (ऽ) के उपयोग जरूरत के मुताबिक करे के हे।

(3) मगही के व्यापक बनवे खातिर जरूरी हे कि 'श' के जगह 'स' के प्रयोग नत्र कइल जाय।

उदाहरण -- देश , वेश, वश ,परिवेश।
देस , वेस ,वस ,परिवेस -- अइसन नत्र करऽ।

(4) हिन्दी भाषा के शब्द के उपयोग मगही में बिना शब्द रूप बिगाड़ले करऽ।
जइसे--
सही रूप -- बिगाड़ल रूप
प्रकृति ----- परकीरति
संस्कृत --- संसकिरीत
प्रणाम ---- परनाम।
प्रचार --- परचार।

(5) अइसन शब्द जेकर प्रयोग हिन्दी अउ मगही दुन्नु में होवे हे तऽ हिन्दी शब्द रूप के प्रयोग करऽ।

- अउरो कत्ते लोकभाषा में गैया ,मैया, नैया ,भैया के प्रयोग तथावत हो रहल हे। मगही में भी एकर पालन करे के जरूरत हे।

उदाहरण --
मैया ! मैं नहीं माखन खायो।

जइसे -- गैया ,मैया , भैया ,नैया।

(6) मगही शब्द लिखे में 'ऐ' के बदले 'अइ' अउर 'औ' के बदले 'अउ' के उपयोग केवल क्रिया पद, सर्वनाम पद अउ योजक पद के लिखे में होवत।

- ई नियम के प्रभाव संज्ञा पद इया विशेषण पद पर नञ रहत।
  जइसे ---
  संज्ञा पद ----
  औझट,औरत,चौखट,चौराहा,
  नैन , खैनी , ऐनक ।
  विशेषण पद--- औगल , बौखल ,बैरी ,भौंचक।
  क्रिया पद -- अइतइ, अइलइ, अइलथिन।
  बतइलक, पूछइत , पूछतउ,
  अइवऽ, अइबइ, अइलऊँ ।
  सर्वनाम पद -- अइसन , कइसन,जइसन ,
  ओइसन, ओइसहीं ।
  योजक पद -- अउ, आउ ,अउर ।

(7) मगही के क्रिया पद में विकारी(ऽ) से पहिले 'ब' के जगह 'व' के प्रयोग करऽ।
उदाहरण -- पढ़ाबऽ (गलत प्रयोग)।
पढ़ावऽ (सही प्रयोग) ।

(8) मगही में प्राणिवाचक संज्ञा में लिंग बोध होतइ बकि क्रिया पद में लिंग बोध के असर नञ रहत।
जइसे -- गोली गैया आ गेलइ ।
बुढ़वा बैला आ गेलइ ।

नीचे लिखल वाक्य देखल जाय --
बबुनी कन्ने गेली ? (गलत)
बबुनी कन्ने गेलइ ?(सही)
बबुनी कन्ने गेलथिन?(सही)

(9)मगही में निषेधात्मक बोधवला हिन्दी के शब्द 'नही' लागी 'नञ' इया 'नऽ' शब्द के उपयोग करऽ ।

(10) मगही में 'करो हइ' के जगह 'करऽ हइ' के प्रयोग करऽ।

(11) मगही में 'करो लगलइ' के जगह 'करऽ लगलइ' इया ' करे लगलइ' प्रयोग सही हे ।

(12) 'जुड़थिन' अउ 'जुड़खिन' में 'जुड़थिन' के उपयोग उचित हे।

(13) जे क्रिया शब्द हिन्दी के हइ , ऊ क्रिया के धातु के साथ मगही प्रत्यय जोड़के मगही क्रिया रुप बनावल जइतइ।
उदाहरण-- बैठ + थिन = बैठथिन।
बैठ+ ल= बैठल ।
बैठ+ इत = बैठइत।
बइठल/ बइठथिन / बइठइत -- गलत प्रयोग हइ। ।
(14)'पढ़इओला' के जगह 'पढ़वला' शब्द के उपयोग कइल जाय ।

(15) मगही में अइसन / कइसन/ ओइसन/ जइसन/ ओइसहीं -- के उपयोग करऽ।

(16) मगही में संज्ञा पद के बहुवचन होवे हे बकि वाक्य रचना करे में संज्ञा के बहुवचन रूप के असर क्रिया पद पर नञ होवत ।
उदाहरण - बुतरुअन गेलइ ।

(17) मगही में टीसन, टीकस, डाक्टर के ई रूप में उपयोग करऽ ।
फ्रेस ,ड्रेस के तथावत उपयोग करऽ ।

(18) मगही में 'करइ हे' अउर 'करइत हे' -- दुन्नु के प्रयोग होवत। दुन्नु के अर्थ अलग- अलग हे ।
उदाहरण -- करइ हे = करता है ।
करइत हे = कर रहा है ।
(19) सहायक क्रिया 'हऽ' के जगह 'हे' इया 'हइ' के प्रयोग कइल जाय।

----------------0---------0-------------------

भाषा

कोय भी भाषा बिना व्याकरण के भाषा कहलावे के हकदार नञ हो सकऽ हे। व्याकरण भाषा ला कानून के किताब हे जेकर आधार पर भाषा के परिमार्जन संभव होवऽ हे।
मगही जेकरा आज भाषा होवे के गौरव हे
ओकर व्याकरण के अहमियत सभे भाषाविद मानऽ हथ।
मगही भाषा के सबध मे बहुत पहिलहीं से लोग अप्पन विचार दे रहलन हे ।ओकरे हम व्यवस्थित रूप देवइ के कोशिश कर रहलऊँ।

पहिले हम भाषा के संबध मे विचार करइ ही ।
भाषा ध्वनि समूह के पद्धति हे जेकर पहमा बोलके अउर लिखके लोग अप्पन विचार के आदान- प्रदान करऽ हथ।
ई तरह से भाषा दू तरह के होवऽ हे:----

(1) मौखिक (2) लिखित ।

जब हम अप्पन विचार बोलके व्यक्त करइ ही ,मौखिक भाषा भाषा कहलावइ हे ।
जब हम लिखके अप्पन विचार प्रकट करइ ही , लिखित भाषा कहलावइ हे।

जब अप्पन विचार लिखके प्रकट करइ के होवे हे तऽ वर्ण इया अक्षर के जरूरत होवे हे।अक्षर अउ वर्ण में भी कुछ अन्तर हे।अक्षर ब्रह्म हे याने अनश्वर हे एकर संबंध ध्वनि इया उच्चारण से हे अउ वर्ण नश्वर हे एकर संबध लेखन से हे ।ओइसे तऽ साधारण रूप से लोग 'अक्षर ' अउर 'वर्ण ' के एक्के मानऽ हथिन।

पहिले मगही भाषा के लिपि कैथी लिपि हलइ बकि अब मगही भाषा ला देवनागरी लिपि के उपयोग होवइ
हे। ई कारण देवनागरी लिपि के वर्णमाला के उपयोग मगही साहित्यकार करइ हथिन।

तऽ देवनागरी लिपि के वर्णमाला के सभे वर्ण के उपयोग मगही भाषा के व्यापक प्रसार ला साहित्यकार नि:संकोच करइ हथिन।

वर्ण विचार

****

वर्णमाला :-------
अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ।
क ख ग घ ङ ।
च छ ज झ ञ।

ट ठ ड ढ ण।
त थ द ध न ।
प फ ब भ म।
य र ल व ।
श ष स ह।
क्ष त्र ज्ञ श्र।
ड़ ढ़।

ऊपर लिखल सभे वर्ण के उपयोग मगही में होतइ ।

मगही भाषा के शब्द लिखइ में 'ऐ' वर्ण के बदले 'अइ'
अउर 'औ' वर्ण के बदले 'अउ' के उपयोग केवल मगही क्रिया के धातु ,सर्वनाम अउ योजक शब्द ला होवत संज्ञा अउ विशेषण शब्द के साथ ई नियम अपनावे के नञ हे ।
जइसे-- संज्ञा – नैया / ऐनक /औरत /औकात ।
क्रिया -- अइथिन / अइतइ /कहबउ।
सर्वनाम -- अइसन / कइसन/ जइसन ।
योजक शब्द -- अउर ।

अनुस्वार अउर चन्द्रविन्दु -- दुन्हु के उपयोग मगही भाषा में मान्य हे।
जइसे--- अंश / वंश / चंदन ।
आँख / पाँख / चाँद ।

विकारी (ऽ) -- जरूरत के मुताबिक विकारी (ऽ) के उपयोग मगही भाषा में होवे हे ।
जइसे -- आवऽ / अइहऽ ।

वर्ण -- मानव पहमा प्रकट कइल सार्थक व अर्थपूर्ण ध्वनि के भाषा कहल गेल हे।इहे भाषा के ध्वनि के लिखित रूप देवइ ला जउन चिह्न के उपयोग कइल जा हइ ओकरा वर्ण कहल गेल हे।
सामान्य अर्थ मे वर्ण भाषा के लघुतम इकाई हे जेकर खंड इया टुकड़ा नञ होवे हे ।

वर्णमाला --- कोय भाषा के सभे वर्ण के व्यवस्थित समूह के इया फिन लेखन ला उपयोग कइल गेल मानक प्रतीक के व्यवस्थित समूह के वर्णमाला कहल गेल हे।

वर्ण :----
वर्ण सामान्यत: दू तरह के होवे हे--

(1) स्वर वर्ण (2) व्यंजन वर्ण ।

स्वर वर्ण भी दू तरह के होवे हे ----

(1) ह्रस्व स्वर (2) दीर्घ स्वर।

स्वर वर्ण :---- जउन वर्ण के उच्चारण में दोसर वर्ण के सहायता के जरूरत नञ होवे हे ,ओकरा स्वर वर्ण कहल गेल हे। जइसे -- अ ,आ, इ, ई आदि।

व्यंजन वर्ण :--जउन वर्ण के उच्चारण बिना स्वर वर्ण के सहायता के संभव नञ हे, ओकरा व्यंजन वर्ण कहल गेल हे। जइसे-- क ,ग ट,ड, प आदि।

स्वर वर्ण के भेद :----

ह्रस्व स्वर वर्ण :-- जउन स्वर वर्ण के उच्चारण में कम समय लगइ हे ,ओकरा ह्रस्व स्वर वर्ण कहल गेल।
जइसे --- अ, इ, उ. ए।

दीर्घ स्वर वर्ण :---- जउन स्वर वर्ण के उच्चारण में ह्रस्व स्वर वर्ण से दुगुना समय लगइ हे ,ओकरा दीर्घ स्वर वर्ण कहल गेल हे।
जइसे-- आ, ई, ऊ।

व्यंजन वर्ण के भेद ----

(1) स्पर्शी व्यंजन वर्ण
(2) अन्तस्थ व्यंजन वर्ण
(3) उष्म व्यंजन वर्ण
(4) संयुक्त व्यंजन वर्ण
(5) तल विन्दुवला व्यंजन वर्ण।

(1) स्पर्शी व्यंजन वर्ण :-- जउन व्यंजन वर्ण के उच्चारण में इंसान के जीह दाँत, तालू इया मसूड़ा से सटइ हे,ओकरा स्पर्शी व्यंजन वर्ण कहल गेल हे।
जइसे -- कवर्ग याने क,ख, ग, घ,ङ।
चवर्ग याने च ,छ, ज, झ, ञ।
टवर्ग याने ट, ठ ,ड ,ढ ,ण।
तवर्ग याने त,थ द, ध, न।
पवर्ग याने प, फ, ब, भ,म।

(2) अंतस्थ व्यंजन वर्ण :-- जउन व्यंजन वर्ण के उच्चारण में हवा मुँह के भीतर कंठ तरफ जाय हे ओकरा अंतस्थ व्यंजन वर्ण कहल गेल हे।
जइसे -- य , र ,ल ,व।

(3) उष्म व्यंजन वर्ण : -- जउन व्यंजन वर्ण के उच्चारण में हवा मुँह के विभिन्न भाग से टकरावे हे ,ओकरा उष्म व्यंजन वर्ण कहल गेल हे।
जइसे – श,ष, स, ह

(4) संयुक्त व्यंजन वर्ण :-- जउन व्यंजन वर्ण दू व्यंजन वर्ण के मेल से बने हे, ओकरा संयुक्त व्यंजन वर्ण कहल गेल हे।
जइसे-- क् + ष = क्ष।
त् + र = त्र।
ज् + ञ= ज्ञ।
श् + र = श्र।

(5) तल विन्दुवला व्यंजन वर्ण :-- जब 'ड' अउर 'ढ' के नीचे याने तल में विन्दु रहइ हे तऽ तल विन्दुवला व्यंजन वर्ण कहलावऽ हे।

अनुस्वार अउर अनुनासिक में अंतर ---
अनुस्वार ओइसन व्यंजन हे जे स्वर वर्ण के बाद आवे हे।अनुस्वार के ध्वनि नाक से निकलऽ हे ।अनुस्वार के उपयोग पंचमाक्षर के जगह पर होवऽ हे।
अनुनासिक ओइसन स्वर वर्ण होवऽ हे जेकर मुँह से जादे अउ नाक से कम ध्वनि निकलऽ हे।

अयोगवाह ----
अइसन वर्ण जेकरा में स्वर वर्ण अउ व्यंजन वर्ण
--- दुन्नु के गुण होवऽ हे।ओइसन वर्ण वर्णमाला में अयोगवाह कहलावऽ हे। 'अं' अउर 'अः' के अयोगवाह कहल गेल हे। अइसन वर्ण जेकर उच्चारण स्वर वर्ण 'अ' से शुरु होवऽ हे अउ व्यंजन वर्ण के वहन करऽ हे , अयोगवाह कहलावऽ हे।

शब्द विचार
****

शब्द:--- वर्ण के मेल से शब्द बनऽ हे जेकर कोय - न- कोय अर्थ भी होवऽ हे।

पद :---- जब कोय शब्द वाक्य में प्रयुक्त होवे हे ,तब ऊ शब्द पद ' कहलावऽ हे।

उत्पत्ति के विचार से शब्द के भेद : -----

(1) तत्सम शब्द
(2) तद्भव शब्द
(3) देशज शब्द
(4) विदेशज शब्द
(5) संकर शब्द

रचना के विचार से शब्द के भेद :-------

(1) रूढ़ (2) यौगिक (3) योगरूढ़ ।

रूप परिवर्तन के विचार से शब्द के भेद :------

(1) विकारी (2) अविकारी ।

प्रयोग के आधार पर शब्द के भेद :——

संज्ञा :--- व्यक्ति , वस्तु, स्थान या भाव के नाम के संज्ञा कहल गेल हे ।

कोय तरह के नाम के बिगाड़ के नञ लिखल जाय ।
जइसे ----
सही रूप -------- बिगाड़ल रूप
श्रीकान्त शास्त्री --- सिरीकान्त शासतरी ।
मृगेन्द्र नारायण --- मिरगेन्दर नरायन ।

जउन नाम जइसे हिन्दी में लिखल जा हइ ,ओइसही मगही में भी लिखऽ।

संज्ञा के भेद :-----

व्यक्तिवाचक संज्ञा -- जउन संज्ञा शब्द से कोय खास व्यक्ति इया जगह के बोध होवे हे ,ओकरा व्यक्तिवाचक संज्ञा कहल गेल हे ।
जइसे --- मोहन ,रोहन ,पटना , गंगा , हिमालय,शेखपुरा आदि।

जातिवाचक संज्ञा --- जउन संज्ञा शब्द से एक तरह के सभे वस्तु , प्राणी जगह के बोध होवे हे ,ओकरा जातिवाचक संज्ञा कहल गेल हे ।
जइसे -- अदमी,शहर , गाय , घर ,किताब, किसान ,मजूर , निसेनी आदि ।

प्रयोग के विचार से शब्द के भेद :----

(1) संज्ञा (2) सर्वनाम (3) क्रिया (4) विशेषण (5) अव्यय ।

द्रव्यवाचक संज्ञा --- जउन संज्ञा शब्द से कोय पदार्थ के बोध होवे हे ,ओकरा द्रव्यवाचक संज्ञा कहल गेल हे ।
जइसे --- चाउर , आँटा, गहुम,दूध ,दही आदि।

समूहवाचक संज्ञा -- जउन संज्ञा शब्द से कोय समूह के बोध होवे हे ,ओकरा समूहवाचक संज्ञा कहल गेल हे ।
जइसे--- सेना ,वर्ग , गुच्छा, झुंड,जुलूस, सभा आदि ।

भाववाचक संज्ञा --- जउन संज्ञा शब्द से प्राणी के भाव, अवस्था अउ दशा के बोध होवे हे ,ओकरा भाववाचक संज्ञा कहल गेल हे ।
जइसे --- सज्जनता , बचपन , लड़कपन, बुढ़ारी , भूख , मानवता, मिठास आदि ।

--------: सर्वनाम :-----

कोय संज्ञा के बदले में जउन शब्द के उपयोग वाक्य में होवे हे ,ओकरा सर्वनाम कहल गेल हे ।
जइसे ---
मोहन घर गेलइ ।
ऊ घर गेलइ ।
पहिला वाक्य में प्रयुक्त 'मोहन ' के बदले में 'ऊ' के प्रयोग कइल गेल। इहाँ 'ऊ' सर्वनाम हे ।
सर्वनाम के विभिन्न रूप :---
हम , हमनी , तू , तों , तोहनी , ऊ , ओहनी ,ई सब,
ऊ सब।

- हिन्दी के ' मैं ' शब्द के जगह मगही में 'हम' के उपयोग होवे हे ।

सर्वनाम के भेद :—

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम-- हम ,हमनी ,हमनी सब,
तू ,तों , तोहनी ,तोहनी सब,
ऊ ,ऊ सब , ओहनी , ओहनी सब ,
ई सब।
(2) निश्चयवाचक सर्वनाम -- ई, ऊ ।
(3) अनिश्चियवाचक सर्वनाम -- कोय , कुछ।
(4) प्रश्नवाचक सर्वनाम - का,कीऽ,कइसे, कउची, कउन,कन्ने।
(5) संबंधवाचक सर्वनाम -- जे - से ।

(6) निजवाचक सर्वनाम -- अप्पन, अपने, खुद।
पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार होवऽ हे --

एक वचन -----	बहुवचन
उत्तम पुरुष -- हम	हमनी ,हमनी सब।
मध्यम पुरुष-- तू ,तो	तोहनी सब,तू सब, तों सब।
अन्य पुरुष-- ऊ ,ई	ओहनी सब ,ऊ सब, ई सब।

- अइसन , जइसन ,कइसन ,ओइसन , अइसहीं , ओइसहीं ---- मगही के सर्वनाम हे। एकर इहे रूप में प्रयोग करे चाही।

——- : क्रिया :——

क्रिया :----- जउन शब्द से काम करइ इया होवइ के बोध होवे हे ,ओकरा क्रिया कहल गेल हे।

जइसे -- उठना ,बैठना, खाना ,खेलना ,उछलना ,कूदना आदि।

- मगही में क्रिया के आखिरी वर्ण 'ई' नञ होवे हे। एकर जगह पर 'इ' के उपयोग करऽ।

जइसे -- गेलइ / अइलइ।

- 'अयलय' के उपयोग व्याकरण सम्मत नञ हे। एकर जगह 'अइलइ' सही क्रिया पद हे।

क्रिया के भेद :—

(1) सकर्मक क्रिया - जउन वाक्य में क्रिया के फल कर्म पर पड़ऽ हे ,ओइसन क्रिया सकर्मक क्रिया कहलावऽ हे।

- जउन वाक्य में क्रिया के साथ कर्म रहे हे, ऊ क्रिया सकर्मक क्रिया कहलावऽ हे।

जइसे-- मोहन किताब पढ़ऽ हे।
ऊपरवला वाक्य मे 'किताब' कर्म हे।

- अइसन वाक्य भी होवे हे जउन वाक्य में कर्म नञ रहऽ हे बकि क्रिया के फल कर्ता पर नञ पड़ऽ हे , ओइसन क्रिया भी सकर्मक क्रिया कहलावऽ हे।
जइसे -- मोहन पढ़ऽ हे।

(2) अकर्मक क्रिया -- जउन क्रिया में कार्य के फल कर्म पर नञ पड़के कर्ता पर पड़ऽ हे ,ओइसन क्रिया अकर्मक क्रिया कहलावऽ हे।

जइसे -- मोहन हँसइ हे।
ऊपरवला वाक्य में 'मोहन' कर्ता हे अउर 'हँसइ हे' क्रिया हे। ई वाक्य में कर्म नञ हे।

(3) दूकर्मक क्रिया - जउन क्रिया के संग दू कर्म होवऽ हे ओकरा दूकर्मक क्रिया कहल गेल हे।

जइसे -- गुरुजी मोहन के मगही पढ़वऽ हथिन।
ऊपर के वाक्य में क्रिया के संग ' मोहन' अउर 'मगही' कर्म हे। ई तरह से क्रिया संग दूगो कर्म हे।

(4) मुख्य क्रिया -- जउन क्रिया के निर्माण मूल धातु से होवे हे , ऊ क्रिया के मुख्य क्रिया कहल गेल हे।
मूल धातु --- क्रिया रूप
पढ़ --- पढ़इत , पढ़इ ,पढ़ऽ, पढ़वइ।

(5) सहायक क्रिया --- जउन क्रिया मुख्य क्रिया के अर्थ के स्पष्ट करइ में सहायता करइ हे , ऊ क्रिया सहायक क्रिया कहलावऽ हे।
सहायक क्रिया वाक्य के काल याने समय के बोध करावइ में सहायक होवऽ हे।

जइसे-- मोहन पढ़ऽ हइ।
मोहन पढ़ऽ हे।
मोहन पढ़ऽ हलन।
मोहन पढ़तन।

(6) संयुक्त क्रिया -- जब कर्ता के भाव स्पष्ट करइ ला दू क्रिया के जोड़के उपयोग कइल जा हइ अउ दुन्नु क्रिया मिलके एक क्रिया के भाव व्यक्त करऽ हे ,ऊ क्रिया के संयुक्त क्रिया कहल जा हइ ।

जइसे --- मोहन खा लेलक ।

ऊपरवला वाक्य मे दू क्रिया के याने 'पढ़ना' अउर 'लेना' क्रिया के जोड़के उपयोग होलइ बकि एक क्रिया के अर्थ याने पढ़इ के भाव लेल गेलइ ।

(7) पूर्वकालिक क्रिया -- जब कर्ता एक काम पूरा करके दोसर काम करइ हे तब पहिलका क्रिया के पूर्वकालिक क्रिया कहल जा हइ ।

जइसे-- मोहन पढ़के घर गेलइ ।
ऊपरवला वाक्य में ' पढ़के' पूर्वकालिक क्रिया हइ ।

(8) प्रेरणार्थक क्रिया -- जब कर्ता खुद काम नत्र करके दोसर के काम करइ ला प्रेरित करइ हे, तऽ ऊ क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया कहलावऽ हे ।

जइसे -- पढ़ना -- पढ़ाना -- पढ़वाना ।
खाना --- खिलाना -- खुलवाना ।
ऊपर लिखल पढ़ाना ,पढ़वाना , खिलाना , खिलवाना प्रेरणार्थक क्रिया हे ।

(9) नामधातु क्रिया--जउन क्रिया के निर्माण संज्ञा, सर्वनाम अउर विशेषण से होवे हे ,ओकरा नामधातु क्रिया कहल गेल हे।

संज्ञा -- हाथ -- हथियाना ।
बात -- बतियाना ।
सर्वनाम-- अपना -- अपनाना ।
विशेषण -- गरम -- गरमाना ।

मगही के क्रिया शब्द-----

लहराना हरकना
सहरना फरकना
हहरना बरकना

कहरना सरकना
टरकना खरकना
झरकना तरकना
रेराना फरकना
मेराना सोरियाना
जोहियाना बटोरना
गरियाना बहटरना
जोरियाना सेराना
हेराना डेराना
सुरसुराना निकाना
फुरफुराना सुबकना
सिहकना हिगराना
बहकना बेगराना
सिहाना हरकाना
परकाना मुकरना
अंकड़ना हँकड़ना
हियाना खियाना
फुसलाना हकलाना

------:विशेषण:------

विशेषण -- जउन शब्द से संज्ञा इया सर्वनाम के विशेषता के बोध होवइ हइ ,ऊ शब्द के विशेषण कहल जा हइ ।
जइसे-- मोटगर किताब ।
चलाक लड़का ।
मिठगर बात ।
मोटगर ,चलाक अउ मिठगर विशेषण हइ।
किताब,लड़का अउ बात संज्ञा हइ ।

मगही में विशेषण के कुछेक शब्द--
पोकठाल ,खिच्चा , खियाल ,तुज्जा , बरियार, बगदल,कमसिन, सुथ्थर,निम्मन, बेस, गेन्हाल,
भुक्खल , बोखल, बोखलाल, सुक्खल, नुक्कल,सुटकल, भटकल।

विशेषण के चार प्रकार होवऽ हइ ---

(1) गुणवाचक विशेषण -- जउन शब्द से संज्ञा इया सर्वनाम शब्द के गुण - दोष, आकार- प्रकार ,रूप-रंग आदि के बोध होवे हे,ओकरा गुणवाचक विशेषण कहल गेल हे।

जइसे--जवान अदमी, खट्टा दही ,बड़गो घर, निम्मन सवाद,लेटाइल देह ।

(2) संख्यावाचक विशेषण-- जउन शब्द से संख्या के बोध होवऽ हे, ओकरा संख्यावाचक विशेषण कहल गेल हे ।

जइसे-- चार कुर्सी , पाँच कलन ।
पहिला , दोसर ,दूसर ,तेसर ।

(3) परिमाणवाचक विशेषण-- जउन शब्द से कोय वस्तु के माप-तौल के बोध होवऽ हे,ओकरा परिमाणवाचक विशेषण कहल गेल हे।

जइसे-- तीन किलो चीनी ।
ढेरमनी , थोड़ा ,जरीसुन ,
चुचुर -चुचुर।

(4) सार्वनामिक विशेषण-- जब कोय सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्द के पहले प्रयुक्त होके विशेषण के काम करऽ हे तऽ ऊ सर्वनाम शब्द सार्वनामिक विशेषण कहलावऽ हे ।

जइसे-- ऊ लड़का , ई कलम।
ऊपरवला पंक्ति में 'ई' अउर 'ऊ' सार्वनामिक विशेषण के काम करऽ हे ।

प्रविशेषण --- जउन शब्द से विशेषण के विशेषता के बोध होवे हे ,ओकरा प्रविशेषण कहल गेल हे ।
जइसे --- धोतिया कुछ छोटा हइ ।
ई बड़ उम्दा किताब हे।
ऊपर के वाक्य में ' छोटा ' पद विशेषण हे अउ

'कुछ' ' पद प्रविशेषण हे। ओइसहीं 'उम्दा ' पद विशेषण हे अउर 'बड़' पद प्रविशेषण हे।

---------: अव्यय :----------

अव्यय :----- जउन शब्द के रूप लिंग ,वचन आदि के प्रभाव से नत्र बदले हे ,ओकरा अव्यय कहल गेल हे ।

जइसे --- आज ,अउर, बकि ,मुदा, निम्मन, वास्ते ,पहमा,बगैरह।

अव्यय के प्रकार :------

(1) क्रिया विशेषण
(2) समुच्चयवाचक अव्यय
(3) संबंधवाचक अव्यय
(4) विस्मयादिवाचक अव्यय ।

क्रिया विशेषण-- जउन शब्द इया पद से क्रिया के विशेषता के बोध होवे हे ,ओकरा क्रिया विशेषण कहल गेल हे ।

जइसे-- मोहन रसे- रसे दौड़ऽ हे ।
सोहन खूब बोलऽ हे ।
रोहन कम खाय हे ।
हम बेअल्ला हो गेलिअइ।

ऊपर लिखल पंक्ति के रसे- रसे ,खूब ,कम, बेअल्ला क्रिया विशेषण हे।

संज्ञा ,सर्वनाम, विशेषण,अव्यय अउ धातु से बनल क्रिया विशेषण -----
संज्ञा से बनल --रात भर ,मन से ।
सर्वनाम से बनल --- ओहनी , जहाँ ।
विशेषण से बनल--- चुपके , धीरे ।
अव्यय से बनल --- झट से , इहाँ से
धातु से बनल --- देखे लेल ।

कुछ क्रिया विशेषण दू शब्द के मिलला से भी बने हे ---

घर- घर ,घड़ी-घड़ी, साफ- साफ ,रात-दिन ,
साँझ - सबेरे, हरदम, जादेतर
कहियो - नञ - कहियो।

क्रिया विशेषण के भेद ------
(1) रीतिवाचक(2) स्थानवाचक (3) कालवाचक (4)परिमाणवाचक ।

रीतिवाचक ---- जे क्रिया विशेषण से काम करे के तौर-
तरीका के पता चले हे ,ऊ रीतिवाचक क्रिया विशेषण
कहलावे हे।
जइसे --- जइसे- तइसे, सहे- सहे ।

स्थानवाचक क्रिया विशेषण-- जे क्रिया विशेषण से स्थान
के बोध होवे हे ,ओकरा स्थानवाचक क्रिया विशेषण
कहल गेल हे।
जइसे--- इहाँ ,उहाँ ,भीतर ,बाहर,एन्ने,
ओन्ने, दहिने ,बामें।

कालवाचक क्रिया विशेषण --- जउन क्रिया विशेषण से
समय के बोध होवे हे ,ओकरा कालवाचक क्रिया
विशेषण कहल गेल हे ।
जइसे --- अभी ,आज ,हर बार,
बार -बार ,दिन भर ,तबहिए, तभिए।

परिमाणवाचक क्रिया विशेषण--- जउन क्रिया विशेषण से
मात्रा के बोध होवे हे ,ओकरा परिमाणवाचक क्रिया
विशेषण कहल गेल हे।
जइसे --- जादे , कम,थोड़के,
काफी, बहुते।

समुच्चयवाचक अव्यय--- जउन शब्द दू शब्द इया दू वाक्य के जोड़इ के काम करऽ हे
ओकरा समुच्चयवाचक अव्यय कहल गेल हे।

जइसे-- मोहन अउर सोहन घर गेलऽ।
मोहन घर गेलन अउर सोहन इसकुल गेलन ।

पहिला वाक्य मे 'अउर' समुच्चयवाचक अव्यय हे जे दू शब्द के जोड़लन।
दोसर वाक्य मे 'अउर' दू वाक्य के जोड़लन।
इहे तरह बकि ,मुदा, इया ,अथवा ,इहे ला समुच्चयवाचक अव्यय हे।
जइसे -- मोहन घर गेलइ बकि सोहन इसकुल गेलइ।
मोहन आवऽ इया सोहन आवऽ।
मोहन मेहनत कइलन इहे से परीक्षा पास होलन।

संबंधवाचक अव्यय---- जउन अव्यय पद इया शब्द एक संज्ञा के संबंध दोसर संज्ञा
इया सर्वनाम से बोध करावे हे ,
ओकरा संबंधवाचक अव्यय कहल गेल हे ।
जइसे-- मोहन सोहन के आगे बैठल हइ ।

ऊपरवला वाक्य में 'के आगे' संबंधवाचक अव्यय
हइ।जदि के आगे' के जगह केवल 'आगे' रहत तऽ संबंधवाचक अव्यय नञ , क्रिया
विशेषण हो जइतइ ।

विस्मयादिवाचक अव्यय---जउन अव्यय शब्द से खुशी, दुख, अचरज ,घृणा , सम्बोधन
आदि भाव के बोध होवे हे ,ओकरा विस्मयादिवाचक अव्यय कहल गेल हे ।

विस्मयादिवाचक अव्यय शब्द इया पद के बाद विस्मयादिवाचक चिह्न (!) के उपयोग
जरूरी हे।

वाह! सोहन चौका लगइलन।
ओह! बहुत दुखद घटना हे।
छि ! ई कीऽ कइलक ।
अजी! एन्ने आवऽ ।
आह! नीक नञ होलइ ।

शब्द के भेद -----

उत्पत्ति के आधार पर :

(1) तत्सम शब्द ----
संस्कृत भाषा के शब्द जेकर प्रयोग हिन्दी में होवे हे अउर मगही में भी होवे
हे, ओकरा तत्सम शब्द कहल जा हइ ।
जइसे -- प्रकृति ,संस्कृति , प्रणाम, प्रयोग ,
प्रचार, परिचय , व्याकरण ।

(2) तद्भव शब्द --- संस्कृत भाषा के शब्द जेकर रूप बदल गेल हे अउ जेकर प्रयोग हिन्दी व मगही में होवे हे, ओकरा तद्भव शब्द कहल गेल हे।

जइसे ---

संस्कृत के शब्द --- बदलल रूप

अग्नि --- ---- आग । शृंगार -- सिंगार।
आश्चर्य --- --- अचरज। चर्म ----- चाम ।
हस्त --- --- हाथ । वधू ---- बहू ।
पत्र ---- --- पत्ता। श्यामल -- सांवर।
क्षेत्र --- --- --- खेत । अमूल्य---- अनमोल।
कर्तव्य ------ -- करतब। अवतार--- औतार।
दक्षिण ------ --- दहिना। कार्य ---- काज ।
चन्द्र --- --- चाँद। गम्भीर --- गहीर
बन्दर --- -- ---- बानर । धैर्य ---- धीरज

(3) देशज शब्द--- देशी बोली के शब्द जेकर उपयोग मगही भाषा में होवे हे ,ओकरा देशज शब्द कहल गेल हे।

जइसे -- लोटा ,डोरी ,पगड़ी ,अनबन, अपजस, ओहार,अनकुर,अगाती,अगारी,अहूठ,अरमेना,अरौवा, ओरियाना,उताहुल,उजलत,उसरना,डिहाँस,लुतरी,फोहा ,धोकड़ी,चेपा,ढनकल,पिट्ठा,दमाही,ममोसर,हिरसी,भुररना, गिरथाइन ,पगहा,नन्हका,मरहिन्ना.करियाती, ढेका, इनारा,ढेला,ढेपा, लुर-खुर,रसगर,ढिक्का,पइना , सुतरी ,धिया -पूता, लुग्गा, दहपेल,अनठेल, पोहा,फोहा, कोहा, टोहा आदि।

(3) विदेशज शब्द:--- अंग्रेजी ,उर्दू ,फारसी अउ कोय भी विदेशी भाषा के शब्द जेकर प्रयोग हिन्दी व मगही में होवे हे ,ओकरा विदेशज शब्द कहल गेल हे।

जइसे --इसकुल, टीसन, हास्पीटल, ट्रेन, टीकस ,
मास्टर.साइकिल।
फ्रेस ,ड्रेस।

(4) संकर शब्द :--जे शब्द दू भाषा के शब्द के मेल से बनल हे ,ओकरा संकर शब्द कहल गेल हे।

जइसे-- रेल + गाड़ी = रेलगाड़ी।

मोटर + गाड़ी = मोटरगाड़ी।
' रेलगाड़ी' में 'रेल' शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द हे अउर ' गाड़ी ' मगही भाषा के शब्द हे।

रचना के आधार पर शब्द के भेद ------

रूढ़ शब्द:-- जउन शब्द के खंड इया टुकड़ा कइला पर कोय खंड इया टुकड़ा के कोय अर्थ नञ होवे हे ,ओकरा रूढ़ शब्द कहल गेल हे।

जइसे -- घर , डर ,पद।

यौगिक शब्द :--- जे शब्द दू शब्द के मेल से बनल हे, ओकरा यौगिक शब्द कहल गेल हे।

जइसे--- गौशाला = गौ + शाला।
धर्मशाला = धर्म + शाला।

योगारूढ़ शब्द:-- जे शब्द अप्पन सामान्य अर्थ छोड़के विशेष अर्थ देवइ हे ,ओकरा योगरूढ़ शब्द कहल गेल हे।

जइसे -- पंकज
पंकज के सामान्य अर्थ हे पंक से जे जन्म लेलन
बकि एकर विशेष अर्थ 'कमल' होवऽ हे।

रूप परिवर्तन के आधार पर शब्द के भेद ------

विकारी शब्द --- जउन शब्द के रूप लंग ,वचन आदि के प्रभाव से बदलऽ हे ,ओकरा विकारी शब्द कहल गेल हे।

जइसे --
बच्चा --- बचवन / बचियन।
बूढ़ा --- बुढ़वन / बुढ़ियन।
गाछ --- गछियन।
ऊ --- ओहनी।
ई --- इनकर।
चल --- चललइ / चलवऽ / चलथिन।
मिट्ठा --- मिठगर ,मिठाए।
विकारी शब्द के भी भेद होवऽ हे ---

संज्ञा ,सर्वनाम, क्रिया ,विशेषण ।

अविकारी शब्द के भेद ---
क्रिया विशेषण ,समुच्चयवाचक अव्यय,
संबंधवाचक अव्यय ,विस्मयादिवाचक अव्यय।

वचन
....

मगही व्याकरण में दू वचन के विधान हे---
(1) एकवचन (2) बहुवचन

एकवचन ---शब्द इया पद के जउन रूप से एक व्यक्ति, एक वस्तु के बोध होवऽ हे ,ओकरा एक वचन कहल गेल हे।

बहु वचन ---- शब्द इया पद के जउन रूप से एक से जादे व्यक्ति इया वस्तु के बोध होवऽ हे ,ओकरा बहुवचन कहल गेल हे ।

एकवचन -------- बहुवचन
बुतरू -----------बुतरुअन ।
लड़का ----------लड़कन ।
बूढ़ा ------------बुढ़वन ।
औरत ----------औरतियन।
संगाती --------- संगतियन।
गाय -----------गययन ।
नदी ----------- नदियन
बाग ------------बगियन।

एकर अलावे मगही भाषा में 'सब' अउ 'लोग' शब्द जोड़के भी एकवचन से बहुवचन बनावल गेल हे।
जइसे--- अपने सब/ अपने लोग/ औरत सब/ साधु सब/
साधु लोग / विद्वान लोग / विद्वान सब।

मगही भाषा के वाक्य में क्रिया पद पर वचन के प्रभाव नञ होवऽ हे ।
जइसे – अपने बोलथिन ।
अपने लोग बोलथिन ।
बुतरू अइलइ।
बुतरुअन अइलइ।

लिंग
....

मगही भाषा में जउन शब्द प्राणिवाचक हे ओकर लिंग निर्धारण के विधान हे बकि बाकी सभे अप्राणिवाचक शब्द के नपुंसक लिंग कहल गेल हे ।
ई आधार पर मगही भाषा में तीन तरह के लिंग के विधान हे ----

(1) पुल्लिंग (2) स्त्रीलिंग (3) नपुसंक लिंग।

(1) पुल्लिंग -- मगही में प्राणिवाचक संज्ञा शब्द जे पुरुषवाची हे ,ओकरा पुल्लिंग कहल गेल हे।
उदाहरण -- बैल ,बौआ ,मर्द , बाछा, किसान ।

(2) स्त्रीलिंग-- मगही में प्राणिवाचक संज्ञा शब्द जे स्त्रीवाची हे, ओकरा स्त्रीलिंग कहल गेल हे।
उदाहरण -- औरत , गाय ,मैया ,बाछी।

(3) नपुंसक लिंग-- जे शब्द प्राणिवाचक नञ हे ,ओकरा सभे के मगही में नपुंसक लिंग मानल गेल हे।
उदाहरण -- किताब, फूल, फल ,आँटा ,गेन्दा।

- प्राणिवाचक शब्द के लिंग निर्धारण विशेषण पहमा कइल गेल हे ।
  उदाहरण -- करकी गैया।
  गोला बैला ।
- मगही वाक्य में लिंग के असर क्रिया पद पर नञ होवऽ हे । अंग्रेजी ग्रामर में भी जेण्डर के असर क्रिया पर नञ होवे हे।
  उदाहरण -- करकी गैया भाग गेलइ ।
  गोला बैला भाग गेलइ ।
- मगही वाक्य में लिंग के असर कारक के विभक्ति (सम्बन्ध कारक)पर नञ होवऽ हे।
  उदाहरण -- मोहन के गोली गैया लगहर हइ ।
  हिन्दी वाक्य में लिंग के असर क्रिया पद अउ कारक विभक्ति पर भी होवऽ हे।
  उदाहरण -- मोहन की गोली गाय लगहर है ।

मोहन की गाय दूध देती है।

विशेषण शब्द में 'का' अउर 'की' प्रत्यय जोड़के पुल्लिंग अउ स्त्रीलिंग शब्द बनावल जा हइ।

जइसे — पुल्लिंग – स्त्रीलिंग
छोटका — छोटकी।
बड़का — बड़की।
गोरका — गोरकी।
पतरका — पतरकी।

मगही पुल्लिंग शब्द में 'ई', 'आइन', 'इनी', 'इन', 'नी'
प्रत्यय जोड़के मगही में स्त्रीलिंग शब्द बनावल जा हइ।
जइसे -- साला - साली/ लड़का -- लड़की/ दादा--दादी /
बड़का -- बड़की। पंडित -- पंडिताइन/
गोवार -- गोवारिन/कहार-- कहारिन/
माली --मालिन/मालिक-- मालकिन/
नट--नटिन/ चमार-- चमारिन/क्षत्री--क्षत्रिन/
मुसहर-- मुसहरनी।

कतिपय पुल्लिंग -- स्त्रीलिंग शब्द ----
पुल्लिंग----- स्त्रीलिंग
बाछा --- बाछी।
बौआ --- बबुनी।
मर्द ---- औरत।
बहनोय -- साली।
भाय --- बहिन।
बैल --- गाय।
मास्टर -- मास्टरनी।
डाक्टर-- डाक्टरनी।
नौकर -- नौकरानी।
तेली -- तेलिन।
मजूर -- मजुरनी।
पासी -- पासिन।
दुसाध -- दुसाधनी।

दुल्हा -- दुलहिन।
चमार -- चमैनी।

उपसर्ग अउ प्रत्यय
****

उपसर्ग :--- उपसर्ग शब्दांश हे जे कोय शब्द के पहिले जुड़के शब्द के रूप अउ अर्थ में बदलाव ला देवऽ हे।
नया शब्द बनवे में उपसर्ग बड़ कारगर होवऽ हे।

मगही भाषा में भी कत्ते तरह के उपसर्ग होवऽ हे।
जइसे :------
(1)संस्कृत अउ हिन्दी भाषा के उपसर्ग

(2)मगही भाषा के उपसर्ग

(3)उर्दू अउ अंग्रेजी भाषा के उपसर्ग।

जइसे:--- अन, अ, उ, उन, उप, प्र, अभि, वि, सम्
उपसर्ग से बनल शब्द ----

अनपढ़,अनबन,अनमोल,अकेला,
उचक्का,उनतीस,उनसठ, उपचार,,उपभोग,
उपयोग,प्रयोग प्रभाव ,अभियोग,विशेष,विमान,
विज्ञान,विजय,विचार, वियोग,संसार, संयोग।

जइसे :--- औ, चौ, दु, सु, कु, स, क, सु
उपसर्ग से बनल शब्द —
औरत,औगुन,औसर,चौपाल,चौखट,
चौमासे, चौराहा,दुधारू,सुभाव,कुमति,कुमार्ग
सपूत ,कपूत, सुमार्ग।

जइसे:--- बे, कम, ला, ना,बद,खुश
उपसर्ग से बनल शब्द —
बेरथ ,बेसुरा.बेशुमार,बेगम,बेवजह,बेहिसाब
कमसिन.कमजोर,लावारिस, लाइलाज,

नाजायज,नापसन्द बदनाम,बदचलन,
बदमिजाज, खुशहाल ,खुशखबरी ।

जइसे :--- हेड, पोस्ट, सब, चीफ
उपसर्ग से बनल शब्द—
हेडमास्टर, हेड क्लर्क,
पोस्टमास्टर, पोस्ट ऑफिस,
सब जज, सब डिवीजन
चीफ मिनिस्टर।

प्रत्यय :--- प्रत्यय शब्दांश हे जे कोय शब्द के अन्त में
जुड़के शब्द के रूप अउर अर्थ में बदलाव ला
देवऽ हे।
जइसे --
पढ़-- पढ़ल,पढ़इत, पढ़तइ ,पढ़लक,पढ़लकइ,
पढ़इतन, पढ़थिन, पढ़इथिन।

प्रत्यय के दुगो भेद होवे हे ---
(1) कृदन्त प्रत्यय (2) तद्धित प्रत्यय ।

कृदन्त प्रत्यय:--जे प्रत्यय क्रिया शब्द के अन्त में जुड़के नया शब्द बनवे हे,ऊ प्रत्यय
कृदन्त प्रत्यय कहलावऽ हे।
जइसे -- पढ़ +थिन = पढ़थिन।
पढ़+ल=पढ़ल।
कह+ल=कहल ।
पूछ + तइ = पूछतइ ।
पढ़ + ताहर= पढ़ताहर।
लिख+ ताहर= लिखताहर।
धो + वल = धोवल ।
हो + वल = होवल।
जगा + वल = जगावल।
हँका + वल = हँकावल।
हँका+ वइत = हँकावइत।

तद्धित प्रत्यय:--- जे प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम अउ विशेषण के अन्त में जुड़के नया शब्द
बनवऽ हे,ऊ तद्धित प्रत्यय कहलावऽ हे।
जइसे :---

संज्ञा शब्द --- रामझ + औता = रामझौता।
बाप+ औती = बपौती।
काठ+ औती = कठौती।
बूढ़ा+औती= बुढ़ौती ।
लोहा+ आर= लोहार ।
चाचा+ एरा = चचेरा।

सर्वनाम शब्द --- अपना+ पन= अपनापन।
अपना + त्व = अपनत्व।
विशेषण शब्द---- भला + आई = भलाई।
चन्द+ न= चन्दन ।
अच्छा + आई = अच्छाई।
मीठा+ आस= मिठास।
गरम+ आहट= गरमाहट।
---------0--------0--------0-----------

समास :-----
****

समास ---
जब दू इया दू से जादे पद आपस के विभक्ति के तेयाग के समस्त पद बनावे हे ,ओकरा
समास कहल गेल हे ।
जइसे -- रसोईघर , चौकन्ना , चौतरफा ,पीछू- पीछू।

समास में दू पद होवऽ हइ ---
(1) पूर्व पद (2) उत्तर पद ।

समास विग्रह --- जब समस्त पद के विग्रह कइल जाय हे,
ओकरा समास विग्रह कहल गेल हे ।
जइसे -- समस्त पद —- समास विग्रह
राजकुमार --- राजा के कुमार
आगु - पीछू --- आगु अउर पीछू

समास के भेद ----
समास के छौ भेद होवऽ हे ----
(1) तत्पुरुष समास (2) द्विगु समास
(3) द्वन्द्व समास (4) कर्मधारय समास
(5) बहुव्रीहि समास (6) अव्ययीभाव समास ।

तत्पुरुष समास :---- जउन समस्त पद के पहिला नञ,
दुसरका पद प्रधान होवऽ हे ओकरा तत्पुरुष समास
कहल गेल हे।
जइसे --- पाठशाला -- पाठ लेल शाला।
गौशाला --- गौ लेल शाला।
मुँहतोड --- मुँह के तोड़ेवला।
आपबीती -- खुद पर बीतल।
मनोहर -- मन के हरेवला।
रसगुल्ला ---- रस से भरल गुल्ला।
मदमाती --- मद से माता।

ई तरह तत्पुरुष समास के भी छौ भेद हे जेकर आधार कारक के विभक्ति हे ----
कर्म तत्पुरुष, करण तत्पुरुष, अपादान तत्पुरुष, सम्प्रदान तत्पुरुष , अधिकरण
तत्पुरुष, संबंध तत्पुरुष।

द्विगु समास :------ जउन समस्त पद के पहिला पद
संख्यावाची होवऽ हे ,ओकरा द्विगु समास कहल
गेल हे।
जइसे --- त्रिशूल = तीन शूल के समाहार।
चौराहा = चार राह के समाहार।
चौमुख = चार मुख के समाहार।
पंचानन = पाँच आनन के समाहार।
सतभैया = सात भाय के समाहार।
सतभतरी,अठोंगरा,छौअंगुरिया,शतदल,शताब्दी ,सतसई
आदि।

द्वन्द्व समास : ------- जउन समस्त पद के दुन्नु पद प्रधान
होवे हे अउर दुन्नु पद एक - दोसर के विरोधी अर्थ देवऽ
हे , ओकरा द्वन्द्व समास कहल गेल हे।

जइसे -- आगु - पीछू = आगु अउर पीछू।
आग- पानी = आग अउर पानी।
रात- दिन = रात अउर दिन।
गरीब -अमीर = गरीब अउर अमीर।
भोरे - सांझ = भोरे अउर साँझ।

जाड़ा- गरमी, चाचा- चाची, माय- बाप ,चूड़ा-- दही ,
औरत - मरद आदि।

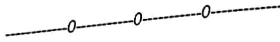
कर्मधारय समास: --------- जउन समस्त पद के एक पद
संज्ञा अउर एक पद विशेषण होवे हे ,ओकरा कर्मधारय
समास कहल गेल हे।

जइसे --- नीलकंठ= नीला हे कंठ जिनकर।
महात्मा = महान हे आत्मा जिनकर।
पीताम्बर = पीयर हे अम्बर जिनकर।
पतरपुच्छी = पातर हे पुच्छ जेकर।
नीलगाय, कमलनयन, सज्जन आदि

बहुव्रीहि समास: ---------- जउन समस्त पद सामान्य
अर्थ छोड़के विशेष अर्थ देवइ हे , ओकरा बहुव्रीहि
समास कहल गेल हे।
बहुव्रीहि समास के कोय भी पद प्रधान नञ होवऽ
हइ।
जइसे --- गजानन - गज के समान जिनकर आनन हे
अर्थात भगवान गणेश।
लम्बोदर - लमहर हे उदर जिनकर याने
भगवान गणेश।
नीलकंठ - नीला हइ कंठ जिनकर याने
भगवान शंकर।
पीताम्बर - पीयर हइ वस्त्र हइ जिनकर
याने भगवान विष्णु।

अव्ययीभाव समास -------- जउन समस्त पद के पहिला
पद अव्यय होवऽ हे ,ओकरा अव्ययीभाव समास कहल
गेल हे।
जइसे --- बेवजह = बिना वजह के।
बाइज्जत = इज्जत के साथ।
लाइलाज = इलाज के बिना।
यथासमय = समय के मुताबिक।
प्रतिदिन= प्रत्येक दिन।
चपचप , लुरलुर, लाइलाज, ताजिनगी ,प्रतिदिन,

निडर, बेखटके , साफ- साफ, रसे- रसे आदि।



——: संधि :——

संधि -- दू वर्ण के मेल से उत्पन्न विकार के संधि कहल गेल हे ।

जइसे -- महा + ईश = महेश। ।
आ + ई = ए ।
तऽ 'आ' अउर 'ई' के मेल से उत्पन्न विकार 'ए' के संधि कहल गेल।
ओइसहीं ---- नीति + ईश = नीतीश (इ+ई= ई)।
नदी + ईश = नदीश (ई+ई =ई)।
विद्या + आलय= विद्यालय (आ+आ= आ)।
रवि+ इन्द्र = रवीन्द्र (इ+इ= ई)।
संधि के तीन भेद होवऽ हइ ---

(1) स्वर संधि -- जब दू स्वर वर्ण के मेल से विकार उत्पन्न होवऽ हइ , ओकरा स्वर संधि कहल गेल हे।

जइसे -- गिरि+ ईश = गिरीश (इ+ई=ई) ।
मुनि+ इन्द्र = मुनीन्द्र (इ+इ=ई) ।
सुर+ ईश= सुरेश (अ+ ई= ए) ।

(2) व्यंजन संधि -- व्यंजन वर्ण के व्यंजन वर्ण से मेल इया व्यंजन वर्ण के स्वर वर्ण से मेल से जे विकार उत्पन्न होवऽ हे ,ओकरा व्यंजन संधि कहल गेल हे।

जइसे -- दिक् + अम्बर = दिगम्बर ।
जगत् + ईश= जगदीश ।
उत् + नति = उन्नति ।
सम् + गम= संगम।
सम्+ वत= संवत ।

(3) विसर्ग संधि --- स्वर वर्ण इया व्यंजन वर्ण के साथ विसर्ग के मेल से जे विकार उत्पन्न होवऽ हइ , ओकरा विसर्ग संधि कहल गेल हे।

जइसे --- तप: + वन = तपस्वी ।
मन: + बल = मनोबल ।
नि:+ आशा = निराशा ।
नि:+ रोग = निरोग ।
नम: + ते = नमस्ते ।

स्वर संधि के पाँच भेद होवऽ हे -----

(1) दीर्घ स्वर संधि ----- जब अ,आ के संग अ, आ के मेल से आ ; इ ई के संग इ,ई के मेल से ई अउर उ,ऊ के संग उ,ऊ के मेल से ऊ बनऽ हे ,ओकरा दीर्घ स्वर संधि कहल जा हइ।

उदाहरण --
विद्या + अभ्यास = विद्याभ्यास।
विद्या + आलय = विद्यालय।
गिरि + ईश = गिरीश।
वधु + उत्सव = वधूत्सव।

(2) गुण स्वर संधि ---- जब अ,आ के संग इ,ई के मेल से ए बनऽ हे ; अ,आ के संग उ,ऊ के मेल से ओ बनऽ हे अउर अ,आ के संग ऋ के मेल से अर् बनऽ हे तऽ ओकरा गुण स्वर संधि कहल गेल हे।

उदाहरण----
महा + ईश = महेश।
दिन + ईश = दिनेश।
महा + उत्सव = महोत्सव।
आत्मा + उत्सर्ग = आत्मोत्सर्ग।
(3)वृद्धि स्वर संधि ----- अ, आ के संग ए, ऐ के मेल से ऐ बने हे अउर अ, आ के संग ओ,औ के मेल से औ बनऽ हे ,तऽ ओकरा वृद्धि स्वर संधि कहल गेल हे।

उदाहरण ------
महा+ ऐश्वर्य = महैश्वर्य।
महा + ओजस्वी =महौजस्वी।
परम + औषध = परमौषध।
महा + औषध = महौषध।

(4) यण स्वर संधि -------इ, ई के संग कोय दोसर स्वर वर्ण के मेल से य बनऽ हे ; उ, ऊ के संग कोय दोसर स्वर वर्ण के मेल से व बनऽ हे अउर ऋ के संग कोय दोसर स्वर वर्ण के मेल से र बने हे ,ओकरा यण स्वर संधि कहल गेल हे।
उदाहरण -------

अति + अधिक = अत्यधिक।
प्रति + अक्षर = प्रत्यक्ष।
इति+ आदि = इत्यादि।
अनु + एषण = अन्वेषण।
अनु+ इत = अन्वित।
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा।

(5) अयादि स्वर संधि --------- ए, ऐ, ओ ,औ के संग कोय दोसर स्वर वर्ण के मेल से ए के अय ; ऐ के आय ;ओ के अव अउर और के आव बन जा हइ तऽ अयादि स्वर संधि कहला हइ।
उदाहरण ---------
श्री + अन = श्रवण।
पौ + अक = पावक।
पौ + अन। = पावन।
नै + अक = नायक।

व्यंजन संधि के नियम -------
व्यंजन संधि के तेरह नियम हइ -----

नियम (1) जब कोय वर्ग के पहिला वर्ण (क् ,च् ,ट् ,त् ,प्) के मिलन कोय वर्ग के तेसर या चौथा वर्ण से या (य् ,र्, ल्,व् ,ह्) से हो जाय तऽ क् के ग् में ,ट् के ड् में, त् के द् में अउर प् के ब् में बदल देवऽ हे।

- यदि व्यंजन वर्ग से स्वर वर्ण मिलतइ तो जे स्वर के मात्रा होतइ ,ऊ हलन्त में लग जइतइ।
- यदि व्यंजन के मिलन होतइ तऽ ऊ हलन्त ही रहतइ।

जइसे -- क् के ग् में परिवर्तन में ------
वाक् + ईश = वागीश।
दिक् + अम्बर = दिगम्बर।
दिक् + गज = दिग्गज।

ट् के ड् में परिवर्तन --------
षड् + आनन = षडानन।

षट्+ यंत्र = षड्यंत्र।
षट्+ दर्शन = षड्दर्शन।

त् के द् में परिवर्तन --------
सत् + आशय = सदाशय।
तत् + अन्तर = तदनंतर।
उत् + घाटन = उदघाटन।

प् के ब् में परिवर्तन------------
अप् + ज= अब्ज।
अप्+ द = अब्द।

नियम (2) अगर कोय वर्ग के पहिला वर्ण (क्, च् ,ट् ,त् , प्) के मिलन न या म वर्ण (ङ, ञ् ,ण ,न् ,म्) के संग होवे तऽ क् के ङ् , च् के ञ् ,ट् के ण् , त् के न् अउर प् के म् में परिवर्तन होवत।

जइसे -- दिक् + मंडल = दिग्मंडल।
वाक् + मय = वाङ्मय।

- ट् के ण में परिवर्तन-------
  षट् + मूर्ति = षण्मूर्ति।
  षट् + मुख = षण्मुख।

- त् के न् में परिवर्तन ---------
  उत् + मूलन = उन्मूलन।
  उत् + नति = उन्नति।
  जगत + नाथ = जगन्नाथ।

नियम (3) * जब त् के मिलन ग, घ, द ,ध ,ब, भ , य ,र ,व से या कोय स्वर वर्ण से होतइ तऽ द् बन जइतइ।

* म के साथ क से म तक के कोय भी वर्ण के मिलनवला वर्ण के अन्तिम नासिक्य बन जइतइ।

उदाहरण ---

म् के साथ क, ख,ग,घ,ङ के मिलन से--
सम् + ख्या = संख्या।
सम्+ गम = संगम।
शम् + कर = शंकर।

म् के साथ च,छ,ज,झ,ञ के मिलन से----
सम्+ जीवन = संजीवन।
सम् + चय = संचय।
किम्+ चित = किंचित।

म् के साथ ट, ठ, ड, ढ, ण के मिलन से -----
दम् + ड = दंड।
खम् + ड = खंड।

म् के साथ प, फ, ब, भ, म के मिलन से -----
सम् + पूर्ण = सम्पूर्ण।
सम् + भव = सम्भव।

त् के साथ ग ,घ ,द, ध , ब, भ ,य, र,व के साथ मिलन से ----
जगत् + ईश = जगदीश।
भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति।
सत् + भावना = सद्भावना।

नियम (4) * त् से परे च् या छ् होवइ पर , च्,ज् या झ् होवइ पर,ज्, ट या ठ होव,ट,ड या ढ होवइ पर ड् अउर ल् बन जा हइ।

*म् के साथ (य, र, ल, व, श, ष, स, ह) में से कोय भी वर्ण के मिलन से म् के जगह अनुस्वार होवऽ हे।

उदाहरण -- सम् + वत = संवत।
तत् + टीका = तट्टीका।
उत् + डयन= उड्डयन।

सम् + शय = संशय।

नियम (5)जब त् के मिलन श् से होवे तऽ त् बदल के च् अउ श् बदल के छ् हो जा हइ। जब त् या द् के साथ च या छ के मिलन होवऽ हे तऽ त् या द् के जगह च् बन जा हइ।

उदाहरण ----

उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट।
शरद + चन्द्र = शरच्चन्द्र।
उत् + छिन्न = उच्छिन्न।
उत् + चारण = उच्चारण।

नियम (6) जब त् के मिलन ह् से होवे तऽ त् बदल के द् अउ ह् बदल के ध् हो जा हइ।त् या द् के साथ ज या झ के मिलन से त् या ज् बदल के ज् बन जा हइ।

उदाहरण ----

उत् + हरण = उद्धरण।
तत्+ हित = तद्धित।
सत् + जन = सज्जन।
जगत् + जीवन= जगज्जीवन।
वृहत्तर + झंकार = वृहज्झकार।

नियम (7) -----

- स्वर वर्ण के बाद छ् आवे तऽ छ् से पहिले च् वर्ण हो जा हइ।
- त् या द् के साथ ट या ठ के मिलन से त् या द् के जगह ट बन जा हइ।
- त् या द् के साथ ड या ढ के मिलन से त् या द् के जगह ड् हो जा हइ।

उदाहरण-------

आ+ छादन = आच्छादन।
तत् + टीका = तट्टीका।
भवत् + डमरु = भवड्डमरु।
स्व+ छंद = स्वच्छंद।

नियम (8) ---

- म् के बाद क से लेके म तक कोय व्यंजन वर्ण रहे तऽ म् अनुस्वार में बदल जा हइ।
- त् के या द् के साथ जब ल मिले हे तऽ त् या द् के जगह ल् बन जा हइ।

उदाहरण----

तत् + लीन = तल्लीन।
विद्युत + लेखा = विद्युल्लेखा।
किम् + चित = किंचित।
उत् + लास।= उल्लास।

नियम (9) ----

- म के बाद य, र ,ल ,व ,श ,ष ,स ,ह में से कोय एक व्यंजन रहे तऽ म् अनुस्वार में बदल जइतऽ।

सम् + योग = संयोग।
सम् + हार = संहार।
सम् + वाद = संवाद।
सम् + शय = संशय।

नियम (10)' न ' के संबंध में नियम -----

- जब ऋ , र ,ष , के न से मेल होवे तऽ न बदल के ण हो जइतऽ।

उदाहरण ----

भूष + अन = भूषण।
प्र + मान = प्रमाण।
राम + अयन = रामायण।

- ऋ ,र ,ष के मेल न से होवे बकि बीच में चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग अउर श अउ स रहे तऽ न नञ बदलऽ हे।

उदाहरण ----

दर्शन, दुर्जन ,अर्जुन ,अर्चना ,पर्यटन।

नियम (11) कोय शब्द के पहिला वर्ण स रहे अउर अ या आ के अलावा कोय दोसर वर्ण आवे तऽ स

बदल के ष हो जइतऽ।

उदाहरण -----
अनु + सरण = अनुशरण ।
सु+ सुप्ति = सुषुप्ति ।
नि+ सिद्ध = निषिद्ध।

नियम (12) यौगिक शब्द के अन्त में यदि पहिला शब्द के अन्तिम वर्ण ' न' रहे तो ओकर लोप हो जइतइ ।
उदाहरण-----
प्राणिन + मात्र = प्राणिमात्र।
राजन + आज्ञा = राजाज्ञा ।

नियम (13) जब ष के बाद त या थ रहे तऽ त के बदले ट अउ थ के बदले ठ हो जइतइ ।
उदाहरण -----
शिष् + त = शिष्ट ।
पृष्+ थ = पृष्ठ ।

विसर्ग संधि के कुछ नियम -----

नियम (1) विसर्ग के पहिले यदि 'अ' अउर बाद में भी 'अ' इया कोय वर्ग के तीसरा ,चौंथा ,पचवाँ वर्ण इया य ,र, ल, व रहे तऽ विसर्ग के जगह 'ओ' हो जइतइ।

जइसे -- मन:+ अनुकूल = मनोनुकूल ।
अध:+ पतन = अधोपतन ।
मन: + बल= मनोबल ।

नियम (2) विसर्ग से पहिले अ ,आ के छोड़के कोय स्वर वर्ण रहे ,अउर बाद में स्वर वर्ण रहे,वर्ग के तीसरा ,चौंथा ,पचवाँ वर्ण इया य,र,ल,व में से कोय रहे तऽ विसर्ग के र या र् हो जइतइ ।

जइसे --- नि: + आहार = निराहार ।

नि: + आशा = निराशा ।
नि: + धन = निर्धन ।

नियम (3) विसर्ग से पहिले कोय स्वर वर्ण रहे अउर बाद मे च छ इया श रहे तऽ विसर्ग श् हो जइतऽ।
जइसे -- नि:+ चल = निश्चल।
नि: + छल = निश्छल ।
दु:+ शासन = दुश्शासन।

नियम (4) विसर्ग के बाद यदि त इया स रहे तऽ विसर्ग 'स्' बन जइतऽ।
जइसे --- नि : + संतान = निस्संतान।
दु:+ साहस = दुस्साहस।
नम: +। ते = नमस्ते ।

नियम (5) विसर्ग से पहिले इ, उ अउर बाद में ट ,ठ ,प, फ में कोय वर्ण रहे तो विसर्ग ष् हो जइतऽ।
जइसे -- नि:+ कलंक = निष्कलंक।
चतु: + पद = चतुष्पद।
नि:+ फल= निष्फल ।

नियम (6)विसर्ग से पहिले अ , आ हो अउर बाद में कोय भिन्न स्वर वर्ण रहे तऽ विसर्ग के लोप हो जइतइ।
जइसे -- नि:+ रोग = निरोग ।
नि:+ रस= नीरस।

नियम (7) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ रहे तऽ विसर्ग में कोय परिवर्तन नञ होतइ ।
जइसे -- अन्त: + करण = अन्त:करण।
प्रात:+ काल = प्रात:काल ।

------0----0----0-------

संधि अउर समास में अंतर :-----

(1)संधि में वर्ण के मेल होवऽ हे अउ समास मे पद के मेल।

(2) संधि में विकार उत्पन्न होवऽ हे अउ समास में विभक्ति के त्याग होवऽ हे।

(3)संधि में संधि विच्छेद होवऽ हे अउ समास में समास विग्रह।

(4) संधि के तीन भेद अउ समास के छौ भेद होवऽ हे।

---------0---------0----------0---------

शब्द के शुद्ध रूप : -------

अशुद्ध शब्द -- - शुद्ध शब्द

नइका ---- नयका।
अयलय ----- अइलइ।
जंसन --·- ---- जइसन।
ऐसन ---- ---- अइसन।
बहीन ------ बहिन।
गेलै ---- --- गेलइ।
कहीत ---- कहइत।
पाबऽ ---- पावऽ।
नहाबऽ ------ नहावऽ।
बदलित ------ बदलइत।
महकित ------ महकइत।
टघरित --- ----- टघरइत / टघरइ।
कहित ------ कहइ/ कहइत।
तइयार ----- तैयार।
देवित हे ---- ---- देवइत हे
चिन्ह --- ---- चिह्न।
अपन ------ अप्पन।
दउड़ ------- दौड़।
वेओहार ----------- व्यवहार/ बेवहार।
बढ़ीया ----- ------ बढ़िया।
ऐबऽ -------- अइवऽ।

चललई ----- चललइ।
उ ----- ----- ऊ।
होए हे ----- ----- होवे हे।
हई ---- --- हइ।

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द
****

जे शब्द सुने में करीब- करीब एक नियन लगे बकि अर्थ अलग- अलग होवे ,ओकरा श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहल जा हइ।

अंश =हिस्सा। पीड़ा = दर्द।
अंस = कंधा। पीढ़ा = चौकी।

अन्य = दोसर। पूछ = इज्जत।
अन्न = अनाज। पूंछ = दुम।

अरि = दुश्मन। पथ = राह।
अरी = संबोधन। पथ्य = रोगी के आहार।

आदी = अदरख। घन = बादल।
आदि = शुरु। धन = दौलत।

कुल = वंश। देव = देवता।
कूल = किनारा। दैव = भाग्य।

केश = बाल। दिन = दिवस।
केस = मुकदमा। दीन = गरीब।

कर्म = कार्य। डोंगी = नाव।
क्रम = सिलसिला। ढोंगी = पाखंडी।

कृति = रचना। भवन = महल।
कीर्ति = यश। भुवन = संसार।

चिर =देर। बहन = बहिन।
चीर = वस्त्र। वहन = ढोना।

दीया = दीपक।　　बात = वार्ता।
दिया = देना क्रिया।　　वात = हवा।

दारा = औरत।　　बहार = शोभा
द्वारा = मारफत।　　बाहर = घर के बाहर।

दशा = हालत।　　नियत = निर्धारित।
दिशा =तरफ।　　नीयत = इरादा।

नारी = औरत।　　मूल = जड़।
नाड़ी = नब्ज।　　मूल्य = कीमत।

नाहर = सिंह।　　नीर = जल।
नहर = जल के स्रोत।　　नीड़ = घोंसला।

पास = नगीच।　　वर = वरदान।
पाश = बंधन।　　बड़ = बड़ा।

पवन = हवा।　　बहु = बहुत।
पावन = पवित्र।　　बहू = वधू।

पका = पका हुआ।　　हाल = हालत।
पक्का = मजबूत।　　हाॅल = बड़ा कमरा।

पता = ठिकाना।　　सर = तालाब।
पत्ता = पेड़ का पत्ता।　　शर = बाण।

परुष = कठोर।　　सन् = साल।
पुरुष = मर्द।　　सन = जूट।

प्रवाह =बहाव।　　सर्ग = अध्याय।
परवाह =फिक्र।　　स्वर्ग = जन्नत।

परिणाम = फल।　　शोक = दुख।
परिमाण = मात्रा।　　शौक = चाव।

पुरी = नगरी।　　शाला = घर।

पूरी = पूड़ी/सम्पूर्ण।　　साला = पत्नी के भाय।

लक्ष = लाख।　　सुर = देवता।
लक्ष्य = मंजिल।　　सूर = आन्हर।

पावल = पाना।　　हंस = एगो पंछी।
पायल = एगो जेवर।　　हँस = हँसी।

रग = नस।　　बस = गाड़ी।
रंग = कलर।　　वश =अधीन।

बस = अउर नञ।　　बेस= निम्मन।
वश = अधीन।　　वेश = रूप।

पुरा = पुराना।　　कोपल = रंज।
पूरा = पूर्ण होना　　कोंपल =अंकुर।

सुरीला = निम्मन सुर　　पाथर = पत्थर।
सुरैला = जोशीला　　पथार = ढेर।

======0========0========

—: विलोम शब्द :—

अर्थ के आधार पर इया लिंग के आधार पर जउन

शब्द एक - दोसर के विपरीत होवऽ हइ ,तऽ ऊ शब्द के विलोम शब्द इया विपरीत शब्द कहल जइतइ ।
ई आधार पर भी शब्द दू तरह के हे --
(क) विपरीत अर्थवला शब्द ।
(ख) विपरीत लिंगवला शब्द।

विपरीत लिंगवला शब्द-----

मैया --बाबू ।	गाय -- बैल ।
बाबा -- मामा ।	लड़का -- लड़की।
नाना -- नानी।	बाछा -- बाछी।
मौसा --मौसी ।	भैंस -- भैंसा ।
फूआ --फूफा ।	घोड़ा -- घोड़ी।
भैया --दीदी ।	गदहा -- गदही ।
भैया-- भौजी ।	बकरा -- बकरी।
चाचा -- चाची ।	बाभन -- बाभनी।
बौंआ == बबुनी।	औरत -- मर्द ।
बौंआ -- मैया।	नौकर -- नौकरानी।
साला -- शलहज।	बेटा -- बेटी ।
बहिन -- बहनोय ।	

विपरीत अर्थवला शब्द ----

आदि -- अंत ।	पास -- दूर ।
अच्छा - खराब।	सज्जन--दुर्जन।
आकाश -- पताल।	संत -- असंत ।
आजादी - गुलामी।	बड़ा -- छोटा ।
अक्सर -- कहियो-कहियो।	दुब्बर--- मोटा ।
अन्हार - इंजोर।	बन्द -- खुलल ।
अकाल -- सुकाल।	गुण -- औगुण ।
असली -- नकली ।	बीच -- किनारा ।
अदमी -- राक्षस।	बदसूरत -- खूबसूरत।
अर्थ - अनर्थ ।	वीर -- डरपोक।
आगु -- पीछू।	बदबू -- खुशबू।
ऊपर-- नीचे।	हित -- अहित ।
उदय -- अस्त ।	बढ़िया -- खराब ।
उत्थान - पतन ।	बच्चा -- बूढ़ा ।
कार -- गोर।	थोक -- खुदरा ।
कच्चा - पक्कल।	देव -- दानव ।

कम --जादे ।	घर -- बाहर ।
कल -- आज ।	रात -- दिन ।
कमी -- बेसी।	खरा -- खोटा ।
कपूत -- सपूत ।	कमजोर -- मजबूत।
जागना -- सुतना ।	अमीर -- गरीब ।
रोना -- हँसना।	ज्ञानी -- मूर्ख।
पढ़ल -- गरपढ़ल।	बेचना-- खरीदना ।
दोस्त -- दुश्मन।	सही -- गड़बड़।
वसन्त -- पतझर ।	खुश -- नाखुश ।
जाड़ा - गरमी ।	धूप -- छाँह।
पाप -- पुण्य ।	पहाड़ -- घाटी ।
नया -- पुराना ।	आग -- पानी ।
सवाल -- जबाव ।	सुख -- दुख ।
महल -- झोंपड़ी।	लोक -- परलोक।
हार --जीत ।	बाढ़ -- सूखा ।
ढीठ -- संकोची।	मेल -- बेमेल ।
गाँव -- शहर ।	जुआनी -- बुढ़ारी ।
पाना -- गंवाना ।	राजा -- गरीब ।
चोर -- साधु ।	ताजा- बासी।
लेटाइल-- साफ- सुथरा	झूठ- साँच।

=============0===============

————: पर्यायवाची शब्द इया समानार्थी शब्द:————

समानाधी शब्द इया पर्यायवाची शब्द अर्थ के आधार पर शब्द के एगो भेद हे जेकर अर्थ होवऽ हे एक निमन अर्थ देवेवला। जब एक से जादे शब्द के अर्थ करीब- करीब समान हे तऽ ऊ सभे शब्द के समानाधी इया पर्यायवाची शब्द कहल जा हइ ओकरे कुछ उदाहरण हे ---

(1)गणेश--गणपति,गजानन,लम्बोदर,एकदन्त,विनायक।

(2)शिव -- शंकर,महादेव,पशुपति,महेश,रूद्र।

(3)दुर्गा-भवानी,शिवा,चामुंडा,महागौरी,चंडी।

(4)विष्णु--केशव,चक्रपाणि,विश्वंभर,जनार्दन,माधव।

(5)गंगा --भागीरथी,जाह्नवी,त्रिपथगा,देवनदी,सुरसरिता।

(6) सूरज- दिनकर,आदित्य,प्रभाकर,दीनानाथ, अंशुमाली।

(7)पर्वत--पहाड़, शैल,गिरि,महीधर,भूधर।

(9)नदी- सरिता ,तटिनी,वाहिनी,शैवालिनी,शैलजा।

(10)तालाब- पोखर, जलाशय ताल,तड़ाग,,पुष्कर।

(11) घर- गृह,निकेतन,आलय,आवास,आश्रम।

(12)धरती- वसुधा,वसुन्धरा,पृथ्वी ,श्यामा,धरित्री।

(13)आकाश- गगन,अम्बर,व्योम,आसमान, अन्तरिक्ष।

(14) हवा- पवन, वायु,बयार,समीर अनिल।

(15) आग -अग्नि,अनल,पावन,दहन,कृशानु।

(16)बेटी- सुता,तनया ,पुत्री,लाडली,आत्मजा।

(17) बेटा- सुत,तनय,लाल,आत्मज,पुत्र।

(18) फूल- पुष्प, कुसुम,प्रसून, सुमन,पुहुप।

(19)काँटा- कंटक,शूल,,कील।

(20) इच्छा- अभिलाषा,आकांक्षा,कामना,लालसा।

(21)क्रोध - कोप,अमर्ष,गुस्सा,रोष,आक्रोश।

(22) आनन्द- आमोद,प्रमोद,खुशी,हर्ष,उल्लास।

(24) दुख- वेदना,पीड़ा,व्यथा,दर्द,मुसीबत।

(25)अमृत- पीयूष,अमी,,सुधा,जीवनोदक।

(26) रात- रजनी,रैन,निशा ,रात्रि,यामिनी।

(27) रोशनी- आलोक,ज्योति,दीप्ति,उजाला,प्रभा।

(28) चाँदनी- ज्योत्स्ना,कौमुदी,चन्द्रिका,चन्द्रातप।

(29)खोज-अनुसंधान,शोध,गवेषणा,पड़ताल,तलाश।

(30)देवता- सुर,अमर्त्य, देव,विबुध।

(31) राक्षस- दानव,दैत्य,असुर, रजनीचर, निशाचर।

(32)दोस्त- मित्र ,सखा,मीत,सुहृद,सहचर।

(33) दुश्मन रिपु,शत्रु,अमित्र,अराति,अरि।

(34) पानी- नीर,सलिल,तोय,उदक,वारि।

(35) कमल-अरविन्द,पंकज,नीरज,शतदल,इन्दीवर।

(36)बादल-मेघ,जलधर,वारिस,जलद,घन।

(37)वृक्ष- गाछ,पेड़,पादप, विटप,शाखी।

(38) किताब- पुस्तक, ग्रन्थ,पोथी,गुटका।

(39)समुद्र- सागर, नदीश,जलनिधि,जलधि,उदधि।

(40) आँख- नेत्र,लोचन,चक्षु,नयन,दृग।

(41) अतिथि- अभ्यागत, मेहमान, पाहन, आगन्तुक।

(42) घमंड-अहंकार,दर्प,गर्व,मद,अभिमान।

(43) राह- पथ, मार्ग,मग,रास्ता,पंथ।

(44) कपड़ा- वस्त्र,पट, दुकूल,परिधान, पोशाक।

(45) शरीर- तन ,वदन, कलेवर,काया,गात।

(46) चाँद- शशि,सुधांशु,सुधाकर,शशांक, राकापति।

(47) महिला- औरत,वामा, अबला, वनिता,नारी।

(48) उद्देश्य- प्रयोजन, मंशा, मंतव्य, मतलब,आशय।

-----------0---------0------------

वाक्य विचार

वाक्य- शब्द के क्रमबद्ध संयोजन वाक्य कहलावऽ हइ
जेकरा से वक्ता विचार विनिमय करऽ हथिन।
मगही वाक्य में हिन्दी वाक्य नियन पद क्रम मान्य हे।
जइसे – कर्ता + कर्म+ क्रिया ।
मोहन किताब पढ़लकइ।

आदर अउ अनादर के आधार वाक्य दू तरह के होवऽ हे---

आदरवला वाक्य -- मम्मी अइलथिन।
बिना आदरवला वाक्य-- मम्मी अइलइ।
इहे तरह ----
बौआ पढ़े ला गेलथिन ।
बौआ पढ़े ला गेलइ ।

वाक्य के भेद ---

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होवऽ हे :-----

(1) सरल वाक्य --- जउन वाक्य में एगो कर्ता अउर एगो क्रिया होवऽ हे ,ओकरा सरल वाक्य कहल गेल हे।

जइसे -- मोहन घर गेलइ।
ऊपर के वाक्य में 'मोहन' कर्ता अउर 'गेलइ' क्रिया हइ ।

(2) संयुक्त वाक्य-- जब दू सरल वाक्य कोय समुच्चयवाचक अव्यय से जुड़ल रहे ,ओकरा संयुक्त वाक्य कहल गेल हे ।

जइसे --
मोहन घर गेलइ अउर सोहन इसकुल गेलइ।
मोहन घर गेलइ बकि सोहन इसकुल गेलइ।
सोहन इसकुल गेलइ इहे ला मोहन घर गेलइ।
तू इहाँ आवऽ इया तू उहाँ खेलऽ।

ऊपर के वाक्य " अउर, बकि ,इहे ला ,इया "
समुच्चयवाचक अव्यय से जुड़ल हइ ।

(3) मिश्र वाक्य-- जउन वाक्य में एगो प्रधान उपवाक्य अउ बाकी आश्रित उपवाक्य होवऽ हे. ओकरा मिश्र वाक्य कहल गेल हे।

जइसे ---
मोहन कहलक कि परोपकार करइ के चाही।
जे कल अइलइ आज ऊ नञ अइलइ।
जब कहऽ हम अइवऽ।
ऊपर के सभे वाक्य में "मोहन कहलक", "आज ऊ नञ अइलइ", "हम अइवऽ" प्रधान उपवाक्य
हइ अउर बाकी सभे आश्रित उपवाक्य हइ।

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हे :-----

(1) सकारात्मक वाक्य--- जउन वाक्य से 'हाँ' याने सकारात्मक बोध होवे, ऊ वाक्य के सकारात्मक वाक्य कहल जाय हे।
जइसे -- हम पढ़वइ।

(2) नकारात्मक वाक्य-- जउन वाक्य से कोय काम के नञ होवे के बोध होवे हे, ऊ वाक्य के नकारात्मक वाक्य कहल जाय हे।
जइसे -- हम नञ पढ़वइ।

(3) प्रश्नवाचक वाक्य -- जउन वाक्य से सबाल पूछइ के बोध होवे हे, ऊ वाक्य के प्रश्नवाचक वाक्य कहल जाय हे।
जइसे -- हम काहे पढ़वइ ?

(4) आज्ञावाचक वाक्य -- जउन वाक्य से आज्ञा इया आदेश के बोध होवे हे ,ऊ वाक्य के आज्ञावाचक
वाक्य कहल जाय हे।
जइसे -- शान्त रहऽ। मन लगाके पढ़ऽ।

(5) इच्छावाचक वाक्य -- जउन वाक्य से वक्ता के इच्छा प्रकट होवऽ हे ,ऊ वाक्य के इच्छावाचक वाक्य कहल जाय हे।
जइसे --तोहनी के जिनगी मंगलमय होवे।

(6) संदेहवाचक वाक्य-- जउन वाक्य से कोय काम होवे में संदेह के संभावना रहे, ऊ वाक्य के

संदेहवाचक वाक्य कहल जाय हे।
जइसे --- ऊ घर गेल होतइ।

(7) संकेतवाचक वाक्य-- जउन वाक्य से कोय काम के बारे में इशारा कइल जाय ,ऊ वाक्य के
संकेतवाचक वाक्य कहल जाय हे।
जइसे -- जब कहवऽ तब अइवऽ।

(8)विस्मयादिवाचक वाक्य -- जउन वाक्य से खुशी, दुख, अचरज ,घृणा आदि के बोध होवऽ हे, ऊ वाक्य के विस्मयादिवाचक वाक्य कहल जाय हे।
जइसे -- ओह! बहुते ठंडक।

पदबन्ध
****

पदबन्ध :--- जब दू इया दू से जादे पद आपस में मिलके व्याकरणिक इकाई के काम करऽ हे,ओकरा पदबन्ध कहल गेल हे।

- व्याकरणिक इकाई से मतलब संज्ञा, सर्वनाम,क्रिया ,विशेषण अउर क्रिया विशेषण
से हे।

पदबन्ध के भेद भी होवऽ हे :

(1) संज्ञा पदबन्ध (2) सर्वनाम पदबन्ध
(3)विशेषण पदबन्ध (4) क्रिया पदबन्ध
(5) क्रिया - विशेषण पदबन्ध।

(1) संज्ञा पदबन्ध--जब एक से जादे पद मिलके संज्ञा नियन काम करऽ हे ,ओकरा संज्ञा पदबन्ध कहल जा हइ।

जइसे -- सभे से नन्हका लड़का मोहन बहुत धीरे- धीरे बोलऽ हे।
ऊपर के वाक्य में "सभे से नन्हका लड़का " संज्ञा पदबन्ध हे।

(2) सर्वनाम पदबन्ध--जब एक से जादे पद मिलके सर्वनाम नियन काम करे है ,ओकरा सर्वनाम पदबन्ध कहल जा हइ।

जइसे --- दौड़इत - दौड़इत ऊ थक गेल।
ऊपर के वाक्य में "दौड़इत-दौड़इत ऊ" सर्वनाम पदबन्ध हे।

(3) विशेषण पदबन्ध--- जब एक से जादे पद मिलके विशेषण नियन काम करे ,ओकरा विशेषण पदबन्ध कहल जा हइ।

जइसे -- भारत के प्रधानमंत्री पं0 नेहरू कहलथिन हल कि आराम हराम हइ।
ऊपर के वाक्य में "भारत के प्रधानमंत्री" विशेषण पदबन्ध हे।

(4) क्रिया पदबन्ध ---- जब एक से जादे पद मिलके क्रिया नियन काम करे ,ओकरा क्रिया पदबन्ध कहल जा हइ।

जइसे -- मोहन पढ़ रहल हे।
ऊपर के वाक्य में "पढ़ रहल हे" क्रिया पदबन्ध हे।

(5) क्रिया विशेषण पदबन्ध --- जब एक से जादे पद मिलके क्रिया विशेषण नियन काम करे हे ,ओकरा क्रिया विशेषण पदबन्ध कहल जा हइ।

जइसे --- ऊ बड़ रसे- रसे बोल रहल हल।
ऊपर के वाक्य में "बड़ रसे - रसे " क्रिया विशेषण पदबन्ध हे।

कारक
****

कारक :-- संज्ञा इया सर्वनाम के जउन रूप से वाक्य में एक शब्द के दोसर शब्द से संबंध जानल जाय ,ओकरा कारक कहल जा हइ।

कारक के प्रगट करे ला संज्ञा इया सर्वनाम के साथ जे चिह्न लगावल जा हइ ,ओकरा विभक्ति कहल जा हइ।
जइसे -- गाछ से पत्ता गिरलइ।
ऊपर के वाक्य में प्रयुक्त 'से' विभक्त हइ।

कारक के आठ भेद होवऽ हे ------
(1) कर्ता कारक (2) कर्म कारक (3) करण कारक

(4)सम्प्रदाय कारक (5) अपादान कारक
(6) सम्बन्धकारक (7) अधिकरण कारक
(8) सम्बोधन कारक।

(1) कर्ता कारक -- वाक्य में जउन पद से काम करेवला के बोध होवऽ हे , ओकरा कर्ता कारक कहल जा हइ।

हिन्दी भाषा में कर्ता कारक के विभक्ति 'ने' होवे हे जेकर उपयोग वर्तमान काल अउर भविष्य काल में नञ बकि भूतकाल में होवे हे बकि मगही भाषा में कर्ता कारक के विभक्ति
नञ होवऽ हे।

जइसे -- राम रावण के वध कइलन।

(2) कर्म कारक --- वाक्य में जउन पद पर काम के प्रभाव पड़े ,ओकरा कर्म कारक कहल जा हइ।

कर्म कारक के विभक्ति मगही में 'के' होवऽ हे।

जइसे -- राम रावण के वध कइलथिन।

(3) करण कारक --- वाक्य में जउन पद पहमा काम होवे के बोध होवऽ हे, ओकरा करण कारक कहल गेल हे।

करण कारक के विभक्ति 'से' होवऽ हे।

जइसे -- रमेश कलम से लिखइ हे।

(4) सम्प्रदाय कारक -- वाक्य में जेकरा लेल काम होवे के बोध होवऽ ह, ओकरा सम्प्रदाय कारक कहल जा हइ।

सम्प्रदाय कारक के विभक्ति ' ,ला, लऽ, लेल ,लागी' चलते , खातिर हइ।

जइसे -- इहे चलते हम कहलिअइ।
इहे लेल लइलिअइ !

(5) अपादान कारक --- जउन पद से अलगाव होवे के बोध होवऽ हे, ओकरा अपादान कारक कहल जा हइ।
अपादान कारक के विभक्ति 'से' होवऽ हे।

जइसे -- गाछ से पत्ता गिरलइ ।

(6) संबंधकारक -- वाक्य में जउन पद से दोसर पद से संबंध के बोध होवे हे. ओकरा संबंधकारक कहल जा हइ।

संबंधकारक के विभक्ति ' के ' होवऽ हे।

जइसे -- ई रमेश के किताब हइ ।

(7) अधिकरण कारक --- वाक्य में जउन पद से क्रिया के आधार के बोध होवे हे ,ओकरा अधिकरण कारक कहल गेल हे ।

अधिकरण कारक के विभक्ति में ,पर ' हइ ।

जइसे -- किताब टेबुल पर हइ ।
बौआ घर में हे।

(8) संबोधन कारक -- वाक्य में जउन पद से केकरो बोलावइ इया पुकारइ के बोध होवे हे ,ओकरा संबोधन कारक कहल गेल हे ।

सम्बोधन कारक के विभक्ति ' हे ,अरे ,अहे, अगे,अजी ' हे।

जइसे -- अजी भैया ! सड़क पर दहिना तरफ नञ चलऽ।

काल
....

काल :--- क्रिया के जउन रूप से कार्य करइ इया होवइ के बोध होवे ,कार्य व्यापार के समय, ओकर पूरा होवे इया अधूरा होवे के बोध होवे, ओकरा काल कहल गेल हइ।

जइसे -- बौआ अइलथिन ।
मैडम पढ़ा रहलथिन ।
पापा कल अइथिन ।

काल के तीन भेद हे ----
(1) भूतकाल (2) वर्तमान काल (3) भविष्यत काल ।

भूत काल :----क्रिया के जउन रूप से पता चले हे कि क्रिया पहिलहीं हो चुकल हे ,ओकरा भूतकाल कहल गेल हे।
जइसे-- मोहन घर चल गेलइ।
मोहन घर चल गेलथिन ।

भूतकाल के छह भेद होवऽ हइ -----

(1)सामान्य भूतकाल-- क्रिया के जउन रूप से पता चले कि क्रिया बीतल समय में होलइ ,ओकरा सामान्य भूतकाल कहल जा हइ ।
जइसे --- मोहन इसकुल चल गेल ।
पापा अइलथिन ।

(2)आसन्न भूतकाल--- क्रिया के जउन रूप से कार्य के अभी- अभी पूरा होवे के बोध होवऽ हइ ,ओकरा आसन्न भूतकाल कहल जा हइ ।
जइसे --- कुसुम घर गेल हे।
अनामिका किताब पढ़लक हे।

(3) अपूर्ण भूतकाल ---क्रिया के जउन रूप से कार्य के शुरू होके पूरा नञ होवे के बोध होवऽ हे ,ओकरा अपूर्ण भूतकाल कहल गेल हे ।
जइसे -- दादी पूजा करइत हलथिन ।
पापा आवइत हलथिन ।

(4) पूर्ण भूतकाल -- क्रिया के जउन रूप से कार्य के पहिलहीं के समय में पूरा होवे के बोध होवऽ हइ ,ओकरा पूर्ण भूतकाल कहल जा हइ ।
जइसे -- मोहन घर चल गेल हलथिन।
रीमा खइले हलथिन ।

(5) संदिग्ध भूतकाल ---क्रिया के जउन रूप से भूतकाल में कार्य पूरा होवे में सन्देह के बोध होवऽ हे ,ओकरा संदिग्ध भूतकाल कहल जा हइ ।
जइसे -- मोहन घर गेल होतइ।
मम्मी खाना खइले होथिन ।

(6) हेतुहेतुमद भूतकाल--- भूतकाल के जउन क्रिया से एक क्रिया पर दोसर क्रिया के आश्रित होवे के बोध होवऽ हइ, ओकरा हेतुहेतुमद भूतकाल कहल जाय हे। हेतुहेतुमद भूतकाल के क्रिया में दूठो क्रिया के होना जरूरी हे ।
जइसे -- अपना के स्वच्छ रखथिन हल तऽ बीमार नञ होथिन हल ।
पेड़ लगइता हल तऽ एतना प्रदूषण नञ होत हल ।

वर्तमान काल :-----
क्रिया के जउन रूप से पता चले हे कि क्रिया अभी हो रहल हे,ओकरा वर्तमान काल कहल जा हइ।
जइसे-- मोहन पढ़ऽ हे।
मोहन पढ़ रहल हे ।
मोहन पढ़लक ।
मोहन पढ़इत होतइ ।
मोहन पढ़इत होवे ।

वर्तमान काल के पाँच भेद होवे हे ---

(1) सामान्य वर्तमान काल -- क्रिया जउन रूप से कार्य के वर्तमान में होवे के बोध होवे ,ओकरा सामान्य वर्तमान काल कहल गेल हे ।
जइसे--- ऊ आवइ हइ ।
पक्षी आकाश में उड़ऽ हइ।
ऊ अखने गेल हे।

(2) तात्कालिक वर्तमान काल---क्रिया के जउन रूप से पता चलइ कि क्रिया अभी हो रहल हे,ओकरा तात्कालिक वर्तमान काल कहल गेल हे।
जइसे -- मोहन गाना गा रहल हे।
सोहन घर जा रहल हे।
बचवन खेलइत हथिन।

(3)पूर्ण वर्तमान काल-- क्रिया के जउन रूप से कार्य के पूरा होवे के बोध होवे हे, ओकरा पूर्ण वर्तमान काल कहल गेल हे।
जइसे ---
ऊ अइले हे।
मोहन खइलक हे।
मेंडम पढ़इलथिन हे ।

(4) संदिग्ध वर्तमान काल-- क्रिया के जउन रूप से पता चले कि क्रिया होवे में सन्देह हे, ओकरा संदिग्ध वर्तमान काल कहल गेल हे।
जइसे -- मोहन घर गेल होतइ ।
ऊ पढ़इत होतइ ।
मम्मी आवइत होथिन ।

(5) संभाव्य वर्तमान काल -- क्रिया के जउन रूप से क्रिया के पूरा होवे के संभावना के पता चले, ओकरा संभाव्य वर्तमान काल कहल गेल हे
जइसे -- देश के आगु बढ़इ के चाही ।
मोहन लौट गइल होत ।
ऊ पढ़इ तो पढ़इ दऽ ।

भविष्यत काल :--- क्रिया के जउन रूप से क्रिया के आवेवला समय में होवे के बोध होवे ,ओकरा भविष्यत काल कहल गेल हे।

जइसे -- मोहन घर जइतइ।
रमेश गेन्द खेलतइ।
सुरेश किताब पढ़थिन।

भविष्यत काल के तीन भेद होवऽ हे -----

(1) सामान्य भविष्यत काल -- क्रिया के जउन रूप से क्रिया के भविष्य में होवे के सामान्य ढंग के पता चले ,ओकरा सामान्य भविष्यत काल कहल जा हइ।

जइसे --- ऊ घर जइतइ।
दीपक अखवार बेचतइ।
बचवन कैरम खेलथिन।

(2) संभाव्य भविष्यत काल --- क्रिया के जउन रूप रूप से कार्य के भविष्य में होवे के संभावना होवे,ओकरा संभाव्य भविष्यत काल कहल गेल हे।

जइसे --- हो सके हे कि हम कल उहाँ जइअइ।
शायद चोर पकड़ा जाय।

(3) हेतुहेतुमद भविष्यत काल ---- क्रिया के जउन रूप से एक कार्य के दोसर आवेवला समय के क्रिया पर निर्भर रहे के बोध होवे ,ओकरा हेतुहेतुमद भविष्यत काल कहल जा हइ।

जइसे -- ऊ कमावइ तो हम खइअइ।
मोहन आवइ तो हम जइअइ।

--------0-------0--------0-----------

वाच्य : -------

वाच्य --- वाच्य क्रिया के रूपांतरण हइ जेकरा से पता चलऽ हे कि क्रिया कर्ता ,कर्म अउ भाव में से केकर अनुसार हे।

वाच्य के तीन प्रकार होवऽ हे ---

(1) कर्तृ वाच्य (2) कर्म वाच्य (3) भाव वाच्य

(1)कर्तृ वाच्य--- जउन वाक्य के क्रिया कर्ता के अनुसार होवे हे ,ओकरा कर्तृ वाच्य कहल जाय हे।
याने कर्तृ वाच्य में कर्ता के प्रधानता होवऽ हे।

जइसे -- मोहन गेन्द खेलऽ हे।
रमेश किताब पढ़इ हइ।

कर्म वाच्य -- जउन वाक्य के क्रिया कर्म के अनुसार होवे हे याने वाक्य में कर्म के प्रधानता होवे , ओकरा कर्म वाच्य कहल जा हइ।

जइसे --- मोहन से गेन्द खेलल जाय हे।
मोहन पहमा गेन्द खेलल जाय हे।

रमेश से किताब पढ़ल जाय हे।
रमेश पहमा किताब पढ़ल जाय हे।

भाव वाच्य ------ जउन वाक्य के क्रिया कर्ता अउर कर्म के अनुसार नञ होके भाव के अनुसार होवे हे याने क्रिया के प्रधानता होवऽ हे, ओकरा भाववाच्य कहल जा हइ।

जइसे --- मोहन से चलल जाय हे।
अब घर चलल जाय

- कर्म वाच्य अउर भाव वाच्य के कर्ता के साथ-- से , पहमा , द्वारा -- में से कोय -न-कोय जरूर रहत।
- कर्म वाच्य के क्रिया सकर्मक अउर भाव वाच्य के क्रिया अकर्मक रहत।

------0--------0---------0------------0-------------

विराम चिह्न के उपयोग :-------
****

वाक्य बिना विराम चिह्न के अधूरा मानल जाय हे। वाक्य में कउन जगह कउन विराम चिह्न के उपयोग कइल जाय एकर जानकारी बड़ जरूरी हे।
भाषा लेखन में शुद्धता ला विराम चिह्न के बड़ महत्त्व हे।एकरा से वक्ता इया लेखक के अप्पन भाव व विचार के स्पष्ट करे में आसानी होवऽ हे। एकर प्रयोग से अर्थ के अनर्थ नञ हो पावऽ हे। विराम चिह्न वाक्य में नञ होतइ तऽ वाक्य के अर्थ स्पष्ट होवे में दिक्कत हो सके हे।
विराम चिह्न के अर्थ ठहराव होवे हे। भाषा के लिखित रूप में विराम चिह्न इया ठहराव ला जउन संकेत चिह्न के प्रयोग होवऽ हे,ओकरे विराम चिह्न कहल जा हइ।

जइसे ---
ओहनी के जगावऽ नञ, सोवऽ दऽ।
मोहन कउन काम करइ हइ ?
हे राम ! ई अच्छा नञ होलइ।
मगही भाषा के व्याकरण में जउन विराम चिह्न के उपयोग होवऽ हे , नीचे लिखल हे ---

(1) पूर्ण विराम (।) -- पूर्ण विराम के उपयोग प्रश्नसूचक इया विस्मयादिसूचक वाक्य के छोड़के कोय भी वाक्य के अन्त में कइल जाय हे।वाक्य के अंत में पूर्ण विराम के चिह्न लगवइ के अर्थ हे कि ई वाक्य पूरा हो गेल।

जइसे -- श्याम कल घर जइथिन ।
मोहन खाना खइलक।
अपने अब जइअइ ।

(2) अर्द्ध विराम (;) -- जब कोय वाक्य में हल्का ठहराव के जरूरत होवे हे बकि वाक्य समाप्त नञ होवे हे जे पूर्ण विराम से कम अउर अल्प विराम से जादे होवे हे ,ओकरा अर्द्ध विराम कहल गेल हे।

जइसे -- सोहन तो अच्छा लड़का हइ ;बकि ओकर संगत ठीक नञ हइ ।

(3) अल्प विराम (,) ----- जेकरा में अर्द्ध विराम से कम ठहराव के जरूरत होवऽ हे ,उहाँ अल्प विराम के उपयोग वाक्य में कइल जा हइ।
एक से जादे व्यक्ति इया वस्तु के दर्शावे ला
अल्प विराम के उपयोग होवऽ हे।

जइसे --- मोहन, सोहन ,रोहन अउर विनय घर गेलइ ।
मोहन आज सेव, नारंगी ,केला अउर पपीता खरीद के लइलकइ ।

(4) उप विराम (:) --जब कोय कथन के अलग देखावे के रहइ हे तऽ उप विराम (कोलन) के उपयोग कइल जा हइ ।

जइसे --- प्रदूषण : एक गम्भीर समस्या।
विज्ञान : वरदान या अभिशाप।

(5) प्रश्नसूचक चिह्न (?) -- जउन वाक्य में कोय प्रश्नसूचक शब्द होवऽ हइ ,ऊ वाक्य के समापन में प्रश्नसूचक चिह्न होवऽ हइ ।

जइसे -- मोहन कहिया अइतऽ ?
सोहन कउन किताब पढ़ऽ हइ ?

(6) विस्मयादिसूचक चिह्न (!) --जउन वाक्य में खुशी, दुख ,अचरज ,घृणा , करुणा ,भय, सम्बोधन आदि भाव प्रकट होवऽ हइ, ऊ भाव के अव्यय शब्द पहमा प्रकट कइल जा हइ अउर ऊ अव्यय शब्द के बाद विस्मयादिसूचक चिह्न के उपयोग होवऽ हइ।

जइसे --- वाह! , ओह ! ,आह ! , शाबाश !
छि- छि !
वाह ! बहुते जल्दी आ गेलऽ।
ओह ! बहुते ठंडक हे।
शाबाश! बहुत अच्छा रिजल्ट।
अजी बौआ ! घर चल जा।

(7) योजक चिह्न (-) ---- योजक चिह्न के प्रयोग भी समस्त पद के दूगो परस्पर समान शब्द इया विपरीतार्थक शब्द के बीच में होवऽ हइ।
अउर जब तुलना के बोध होवऽ हइ ,तभियो योजक चिह्न के प्रयोग होवऽ हे।

जइसे --- रसे - रसे ,सहे- सहे , भोरे- भोरे ,
रात - दिन ,राजा - रानी , राजा- प्रजा।
गुलाब - सन चेहरा।

(8) विवरण चिह्न (-) - कोय बात के विवरण देवे ला विवरण चिह्न का प्रयोग कइल जा हइ ।

जइसे -- समास के भेद :---
संज्ञा के पाँच भेद :----

(9) अवतरण इया उद्धरण चिह्न (" --------- ") --

किनकरो कहल बात के ओइसही लिखे ला अवतरण इया उद्धरण चिह्न के प्रयोग कइल जा हइ ।

- जब कोय वाक्य व वाक्यांश में उद्धरण चिह्न लगवइ के हे तऽ दोहरा उद्धरण चिह्न अउर कोय शब्द व पद मे उद्धरण चिह्न लगवइ के हे तऽ इकहरा उद्धरण चिह्न लगतइ ।

जइसे -- महात्मा गाँधी कहलथिन , "खराब लिखावट अपूर्ण शिक्षा के निशानी हइ "।

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी के महान कवि हथिन।

(10) लाघव चिह्न(0)--- कोय बड़गर शब्द के संक्षेप में लिखइ ला लाघव चिह्न के प्रयोग कइल जाय

हइ ।
जइसे --- डाक्टर--- डा0 ।
इंजीनियर--- इंजी0 ।

(11) कोष्ठक () --- अर्थ के अउर जादे स्पष्ट करे ला शब्द व वाक्यांश के कोष्ठक के अन्दर लिखल जा हइ।

जइसे -- धर्मराज (युधिष्ठिर) सत्य अउर धर्म के संरक्षक हलथिन ।

(12)त्रुटिपूर्ण चिह्न (^) -- जब कोय वाक्य में भूलवश कोय शब्द व पद छूट जाय हे तऽ त्रुटिसूचक चिह्न के प्रयोग होवऽ हइ ।

जइसे --मोहन के बाप के ^ गुलेटननाथ हइ।

(13) दीर्घ उच्चारण चिह्न याने विकारी (ऽ) -- जब कोय वाक्य में कोय शब्द व पद के उच्चारण में अन्य पद व शब्द के बनिस्पत जादे समय लगे हे तऽ दीर्घ उच्चारण चिह्न (विकारी) के प्रयोग होवऽ हे।
जइसे -- बौआ घर चलऽ।
आवऽ हिअइ ।

-------------0--------0----------0--------------

मगही के शब्द जेकर उपयोग जरूरी हइ :——

हिन्दी शब्द--- मगही शब्द
मैं --- ---- हम ।
हमलोग----- हमनी/ हम सब ।
तुम ------ --- तू / तों ।
तुमको - ---- ---- तोरा / तोहरा ।
तुमलोग ----- तोहनी / तों सब ।
वह ---- ---- ऊ ।
वे लोग ------- ऊ सब/ ओहनी ।
यह ---- ---- ई ।
इसको --- --- एकरा ।
इनको -- ---- ---- इनकरा ।
ये लोग --- ---- ई सब ।
आप --- ---- अपने ।
आपलोग ---- --- अपने सब ।
यहाँ ----- --- इहाँ ।
वहाँ ---- ---- उहाँ ।
इस ओर ----- एन्ने ।
उस ओर ----- ओन्ने ।
अपना --- --- अप्पन ।
उसने --- ओहे / उहे ।
अब तक ------ अब ले ।
इसी कारण ------ इहे से/ इहे चलते । इहे खातिर।
एक बार ---- एक तुरी। एक दफा ।

और ----- --- अउर / अउ ।
अथवा --- ---- इया ।
लेकिन ---- ---- बकि / मुदा ।
इसलिए ---- ---- इहे लऽ/ इहे ले / इहे लागी/ इहे से ।
क्योंकि --- --- काहेकि / काहे ला ।
अच्छा ---- ---- उम्दा / बेस / निम्मन।
केलिए---- ---- लेल / लऽ/ लागी । खातिर।
नही ---- --- नञ / नऽ ।
समान / के तरह ---नियन / सन ।
समान -- ----- जइसन ।

जैसा -- ------ जइसन।
ऐसा --- --- - अइसन।
वैसा - -- --- ओइसन।

प्रश्नात्मक शब्द-------

हिन्दी - --- -- मगही

कौन -- --- --- के।
किसने --- --- के।
किसे -- ----- केकरा।
किन्हें --- -- -- किनका।
कैसे -- ----- -- कइसे।
कैसा ---- - -- कइसन।
क्या --- --- --- का / कीऽ /कउची।
क्यों / किसलिए ---- काहे।
कब -- --- --- कहिया / कइना।
कहाँ ------ ---- कहाँ / कन्ने / कहमा।

-------0------0---------0---------

संज्ञा शब्द से विशेषण शब्द रचना : --------

संज्ञा शब्द ---- विशेषण शब्द ------
किताब ---- किताबी । संज्ञा ---- विशेषण
काँटा ----- कंटीला । खेल ---- खेलाड़ी।
कमाई ---- -- कमाऊ । धन ----- धनी ।
कागज --- -- कागजी । नाम ------ नामी।
गाँव --- ---- गँवार । नमक ----- नमकीन।
घमंड ---- --- घमंडी । मर्द ----- मर्दाना ।
चार --------- चौथा । हवा ----- हवाई।
चाचा -------- चचेरा । सुर --- ---- सुरीला।
आलस्य------ आलसी । चाल ----- चालू ।
जवाब ---- जवाबी । मौन ------ मौनी ।
झगड़ा ---- झगड़ालू । पेट ---- ---- पेटू ।
दान ------- दानी । रोज ---- -- रोजाना।
दया ------- दयालु । तीन --- तीसरा।
पहाड़ ------- पहाड़ी । जोश ----- जोशीला।

क्रिया शब्द से विशेषण शब्द रचना -----

अड़ना --- अड़ियल।
लड़ना ---- लड़ाकू।
पालना --- पालतू।
टिकना ---- टिकाऊ।
बिकना ----- बिकाऊ।
भागना ----- भगोड़ा ।
भूलना ------ भुलक्कड़।
गाना ------ गवैया।
चाटना ----- चटोर ।
झगड़ना ----- झगड़ालू।
-----------0----------0-------------

मगही के कुछ वाक्य----

हिन्दी वाक्य ---- मगही वाक्य

मोहन पढ़ता है। --- मोहन पढ़ऽ हे।
मोहन पढ़ता है।--- मोहन पढ़ऽ हइ।
मोहन पढ़ रहा है। मोहन पढ़इत हइ।
मोहन पढ़ रहा है। मोहन पढ़ रहल हे।
मोहन ने पढ़ा है। मोहन पढ़लका।
मोहन पढ़ता था। मोहन पढ़ऽ हला।
मोहन पढ़ रहा था। मोहन पढ़इत हला।
मोहन पढ़ रहा था। मोहन पढ़ रहल हला।
मोहन ने पढ़ा था। मोहन पढ़लक हला।
मोहन पढ़ेगा। मोहन पढ़तइ।
मोहन पढ़ रहा होगा। मोहन पढ़ रहल होतइ।

--------0-----------0---------0----------

कहावत अउर मुहावरा :------

कोय भी भाषा के समृद्धि में कहावत अउर मुहावरा के मजबूत योगदान होवे हे। कहावत अउर मुहावरा जे साधारण अर्थ के छोड़के विशेष अर्थ देके वक्ता के कथन के स्पष्ट करे में सहयोगी बने हे। कोय भी भाषा बिना कहावत अउ मुहावरा के नञ रह सके हे।

कहावत अउ मुहावरा -- दुन्नु में बहुते अन्तर हे। कहावत के उपयोग कोय कथन के उदाहरण ला कइल जा हइ अउर मुहावरा के उपयोग वाक्य के अन्त में क्रिया पद के तरह होवे हे।
मगही में कहावत अउ मुहावरा ढेंगराल हे। मानऽ तो हजार से जादे कहावत अउ फिन मुहावरा भी बकि बानगी के तौर पर कुछ कहावत अउ मुहावरा प्रस्तुत हे ---

मगही के कुछ चुनिन्दा कहावत —

(1) नाक नञ मुँह दीपचनमा नाम = नाम के मुताबिक काम नञ।

(2) बड़-बड़ गदही भाँसल जाय नरगदहिया कहलक कत्ते पानी = बड़का-बड़का के तो ठेकान नञ।

(3) घोड़ा संग बेंगा नाल ठोकइतन = अप्पन औकात में रहऽ।

(4) आम के आम गुठली के दाम = रत्ती -रत्ती के हिसाब।

(5)पोसल कुत्ता काटे हे= जेकरा पर करवऽ विश्वास ओकरे से होतऽ धोखा।

(6)बराबर नञ बराबर तऽ उखड़ी चढ़ बराबर = झुठकोलवा बराबरी।

(7)राम नाम टेढ़ो भला = निम्मन काम कइसहुँ कर ला।

(8)घर-घर देखा एक्के लेखा = हरेक घर के एक्के हाल।

(9)रहे बाँस नञ बजे बाँसुरी= समस्या के समूल खत्म करऽ।

(10)मारे मन सुखावे पेट तब करे टका से भेंट = अपव्यय से बचऽ ।

(11) मियाँ के दौड़ मस्जिद तक= सीमित जानकारी ।

(12)लग्गी से घोड़ा के घास खिलावे ?= जे भी काम करऽ ,मन से करऽ।

(13)लाचारी के नाम ब्रह्मचारी = जब नञ रहल कोय जुगाड़ तो कीऽ करवा।

(14)भोज हजुर कोंहड़ा रोपे= समय नगीच होला पर समाधान के चिन्ता।

(15)बूढ़ सुग्गा पोस मान = सीखे के भी समय होवे हे।
(16)फटलो हे तो पीताम्बर= अच्छा अदमी कतनउ खराब तो दोसर से बहुते अच्छा।

(17)फुसरी से भोकन्दर = बात के बतंगर नञ करऽ।

(18) चोर सहे इंजोर= रोशनी में चोर नञ ठहरतो।

(19) नोख मजूरी चोखा काम = उचित मजदूरी निम्मन काम।

(20) कदुआ पर सितुआ चोख = कमजोर के सभे सतावे ।

(21) चोर- चार मौसेरा भाय = एक विचार के लोग।

(22) चोर के दाढ़ी में तिनका = चोर के पहचान ।

(23) माछी खोजे घाव दुश्मन खोजे दाव= मौका के ताक में रहे हे माछी अउ दुश्मन।

(24)मंगलमुखी सदासुखी=मंगल दिन सदा सुखकारी।

(25)भीतर के हाल सहदेवे जाने= दिल के हाल दोसर कोय नञ जाने।

(26)बैठल से बेगारी भला = कोय काम करते रहऽ ।

(27) परकल गिदरा ककड़ी खेत = एक्के काम के वास्ते बार-बार प्रयास ।

(28)जेकर बनरी उहे नचावे = विषय विशेषज्ञ ही कहे।

(29) देश तबाह नेता से बाप तबाह बेटा से=देश के तबाही के कारण नेता अउ बाप के तबाही के कारण बेटा होवे हे।

(30) भेस से मिले भीख = अच्छा भेस बनावऽ , लाभ मिलत ।

(31) भूख लगे तब सत्तू साने = जरूरत के मुताबिक काम ।

(32) बिन गांगो झूमर नञ= विषय विशेषज्ञ के महत्त्व।

(33)पूंजी माने फार कुदार = सीमित संसाधन ।

(34) बिना फीस के वकील= बिन पूछले सलाह।

(35) बुरबक के पैसा होशियार के जलखय= बुरबक के धन बुद्धिमान ठग लेवे हे ।

(36) पूस के दिन फूस,माघ के दिन बाघ = पूस महीना के दिन के समय जल्दी बीत जाय हे बकि माघ महीना के दिन के समय लमहर होवे हे ।

(37) बानर कीऽ जाने आदी के सवाद = मूर्ख कीऽ समझे ज्ञान के बात।

(38) बाँझ की जाने परसौत के हाल ?= जे दुख भोगलथिन उहे पीड़ा के समझ सके हथिन।

(39) तुरन्त दान महाकल्याण = अच्छा काम जल्दी करऽ ।

(40)तेलो जरे घरो अन्हार = खर्च भी होवे अउ लाभ

भी नञ।

(41) दानेदार दुश्मन भला नादान दोस्त नञ = नासमझ दोस्त से छहाछित दुश्मन अच्छा।

(42) जहाँ गाछ नञ बिरिछ उहाँ रेंड़ प्रधान = जहाँ कोय होशियार नञ उहाँ बुरबकवे होशियार।

(43) खाय के खरची नञ डेउढ़ी पर नाच= औकात के मुताबिक काम करऽ।

(44) चट मड़वा पट बियाह = झटपट काम निबटावऽ।

(45) फूटल ढोल = बेवजह बोलइ में लगल लोग।

(46) ढेर जोगी मठ उजाड़ = कोय एक के नेतृत्व में प्रगति संभव हे।

(47) हाथ छैत मोंछ टेढ़= शक्ति रहते निरुपाय।

(48) हम्मर बियाह मे तों नटुआ तोहर बियाह मे हम नटुआ = परस्पर एक दोसर के प्रशंसा करना।

(49) हाथी चले बजार कुत्ता भुके हजार =अप्पन काम कइले चलऽ लाख कहे कुछ कोय।

(50) अपने मुँह मिया मिट्ठू = अप्पन प्रशंसा अपने करे।

(51) दीया के पेन्दिए तर अन्हार= दोसर ला रोशनी अउ अपने अन्हार मे।

(52) ठाम गुण काजर कुठाम गुण कारिख = जगह जगह के बात।

(53) बैंगन केकरो ला गुणकारी केकरो ला बातर = एक्के चीज केकरो ला लाभकारी अउ केकरो ला नुकसानदेह।

(54) कान बहिर पीठ गहीर= चुपचाप अप्पन काम करइत रहऽ।

(55) कोय काहु मगन कोय काहे मगन = अप्पन - अप्पन काम में सभे मगन।

(56) उल्टे चोरा मारा- मारी = भ्रष्ट व्यक्ति शरीफ के करे निन्दा।

(57)धरफर काम शैतान के = कोय भी काम में जल्दबाजी नञ करऽ।

(58) कौवा से तेज कौवा के बच्चा= बाप से बेटा होशियार।

(59) बाला लखन्दर = बहुते बहादुर।

(60) हँसले घर बसे हे = तरक्की करत।

(61) धोवल भैंसिया पाँको में = सब चौपट।

(62) नञ नइहरे सुख नञ ससुरे सुख = अभागल जिनगी।

(63) सब धन साढ़े बाइस पसेरी = एक समान।

(64) नञ उधो के लेना ,नञ माधो के देना= अलगे-अलगे रहऽ।

(65) पैसा नञ कौड़ी बीच बजार दौड़ा - दौड़ी = बिन साधन भविष्य के कल्पना।

(66) लात के देवता बात से नञ माने= आदत से लाचार।

(67) ढेर भक्ति चोर के लक्षण = नाजायज लाभ लगी प्रयास।

मगही के मुहावरा :---------

(1) फुल के कुप्पा होना -- अप्पन बड़ाय सुनके फुल के कुप्पा नञ होवऽ।

(2) चभला के बोलना -- चभला के बोलइ के आदत ठीक नञ हे।

(3) हिवइत रहऽ-- हाथ- गोड़ लारऽ, बैठके कीऽ हिवइत हऽ?

(4) गुरेरऽ हऽ = हम ठीक कहलिअइ ,हमरा गुरेरऽ नञ।

(5) आँख लगल -- (नीन आइल) -- अभी हम्मर आँख लगल जाय हे।

(6) आँख खुलल -(ज्ञान होइल) -- उनकर बात सुनके हम्मर आँख खुल गेल।

(7) आज कल्ह कइल --(टाल मटोल कइल)-- आज कल्ह कइला से काम नञ चलत।

(8) कान भरलक --(शिकायत कइलन) -उनकर कान भरके हम्मर काम नञ बिगाड़ऽ।

(9) आग में घी डाललन-- (क्रोध भड़कल)-- आग में घी डालके काम बिगाड़लक।

(10)आँटा- दाल के भाव मालूम -- (दिक्कत महसूस होवे) -- महगाई बढ़इ से गरीबकन के आँटा - दाल के भाव मालूम हो रहल हे।

(11) आँख में धूरी झोंकलन --(धोखा देलन)--सोहन आँख में धूरी झोंकके अप्पन काम निकाले में माहिर हे।

(12) टाँग अड़ावल --(बेमतलब दखल देलन)-- मंगरुआ दोसर के काम में टाँग अड़ाके अपना के

होशियार समझइ हे।

(13) लाल- पियर होवल --(गुस्सा करइ) बेटा के गलत काम करइत देख सोहन लाल- पियर होवे लगल।

(14)धूरी चटइलन --(हरा देलन)-- क्रिकेट में बी टीम ए टीम के धूरी चटा देलक।

(15) तिल के ताड़ कइलन--(बात बढ़इलन) -- विरोधी दल सत्ता पार्टी के मामूली बात के भी तिल के ताड़ कर देवइ हे।

(16) गोइठा में घी सुखावल -(बेकार के खर्च)-- पढ़ाय- लिखाय पर खर्च के गोइठा में घी सुखाना नञ समझऽ।

(17) नीप- पोत के बराबर कइलन--(चौपट कइलन) -- केतना मेहनत से खेती कइलूँ बकि इन्द्र भगवान नीप - पोत के बराबर कर देलन।

(18) माथा चढ़इलन --(मन बढ़इलन) -- रमेश ढेर दुलार करके बाल बच्चा के माथा चढ़ा लेलन।

(19) नाकों दम कइलन--(खूब तंग कइलन।)-- रह - रह के वर्षा किसान के नाकों दम कइले हे।

(20) झोला ढोवे --(खुशामद करइ) नेतवन के झोरा ढोके मंगरू अप्पन काम बना लेलन।

(21) मुँह से लार टपके -(लालच होवे) मिठाय देखके बुतरुअन के मुँह से लार टपकवे करता।

(22) पेट में पानी नञ पचे --(बिन कहले नञ रहत)-- मोहन के मत बतावऽ,ओकर पेट में पानी भी नञ पचे हे।

(23) बेरा पार करतन --(समस्या से निजात देतन) --

धीरज धरऽ , भगवान बेरा पार करथिन ।

(24) छगुनइत रहऽ - (विचारइत रहऽ) -- जे भगवान चाहथिन , उहे होतइ। तों अइसहीं छगुनइत रहऽ।

(25) पानी उतरलन-(इज्जत उतारलन) -- चोरी करइत पकडइला पर नन्हकू के पानी उतर गेलन।

(26) पानी- पानी कइलन -(बेइज्जत कइलन) -- वकील साहब बहस में खिलाफ पक्ष के पानी- पानी कर देलन।

(27) पानी चढ़इलन--(उत्तेजित कइलन) रमेश भोरे से संदीप के बोल- बोल के पानी चढ़ा देलक।

(28) उल्टा उस्तरा से मुड़लन--(बेरहमी से लूट लेलन)- अमीर लोग गरीबकन के उल्टा उस्तरा से मुड़ देवे हथ।

(29) पेट भरल -(संतुष्ट होलन)-- तोहर काम देखके हम्मर पेट भर गेल।

(30) झख मारलन--(बेकार बैठल)- बैठ के झख मारला से काम नञ चलत।

(31) घोड़ा बेच के सूतल--(निश्चिंत होलन)-- परीक्षा सिर पर सवार हे अउ तू घोड़ा बेचके सूतल रहऽ।

(32) पासा पलटलन --(बाजी मारलन)- माघ के वर्षा से किसान के पासा पलट गेल।

(33) गोटी लाल कइलन--(धाक जमइलन)- अखने मोदी जी सऊँसे दुनिया में गोटी लाल करे में

लगल हथिन ।

(34) पलड़ा भारी पड़ल--(बात के वजन होलन)- विधान सभा चुनाव में फिन योगी जी के पलड़ा भारी रहत।

(35) गजरा मुरइ बूझलन--(बड़ मामूली समझलन)- दुश्मन के गजरा मुरइ नञ समझऽ।

----------0--------0-----------

मगही के महान कवियन के कविता के अंश उदाहरण के तौर पर-----

श्रीकान्त शास्त्री ----
रसे- रसे करइ आने मोती के कटनियां
काट धरतइ धरती के हजुरवा हो।

रामप्रसाद सिंह -----
ओकरा नीचे कल कल झरना बहइत उज्जर पानी।
दूर देस के थकल बटोही पिअइत हे मनमानी।

गोवर्द्धन प्रसाद सदय'----
ऊ बँसबाड़ी में तो देखऽ ठुमक रहल पुरबैया।
राँभ उठल हे आझ खुसी से नन्ददास के गैया।

रामनरेश पाठक ----
मनमा में लुक- छिप बैठल पंडितवा।

योगेश्वर प्रसाद सिंह 'योगेश' --
खरहन्ने में रात गमइलूं, सिर न करुवा तेल रे।

बाबूलाल मधुकर----
तनमा के डाहि - डाहि करइ कउन भोर।

जयराम सिंह----
जादू के कमाल अइसन कि पत्थर में सुगबुगिया ना।

मिथिलेश ---- तब चकमक पत्थर हम धइलूं
पशुबल सीस झुकइलक।

प्रो0 रामनरेश प्र0 वर्मा ----
अइसन बहे बयार, देस के कोना- कोना गमक उठे।
राम राज आबे,कान्हा के पाँव पैंजनी झमक उठे।

कवि सुमन्त--
चढ़ल वसन्त बाकी ठंढ़ा नऽ गेल हे।

प्रकृति के लीला अजबे इ खेल हे।

------------:रस :------------

रस काव्य के आत्मा हइ।अलौकिक स्थिति हइ
जेकर अनुभूति से दिल आनन्द से भर उठइ हइ।काव्य के
पढ़के, सुनके इया देखके पाठक ,श्रोता इया दर्शक के हृदय में जउन भाव के अनुभूति
होवऽ हइ ,ओकरा रस कहल जा हइ।
जब स्थाई भाव के विभाव ,अनुभाव अउर संचारी भाव से संयोग होवऽ हइ ,ऊ रस रूप
में व्यक्त हो जा हइ ---

विभाग अनुभाव संचारी संयोगाद्रस निष्पत्ति।

रस के अंग ----

(1) स्थाई भाव --- सहृदय के अंतःकरण में जे भाव स्थाई रुप से मौजूद रहइ
हइ अउर उपयुक्त वातावरण पाके सजग हो जा हइ ,स्थाई भाव कहला हइ
।

(2) विभाव --- स्थाई भाव के जगवेवला कारक विभाव कहला हइ।
विभाव के दू भेद हइ ----
(क) आलम्बन --जेकरा प्रति स्थाई भाव उत्पन्न
होवऽ हइ , ऊ आलम्बन कहला हइ।
आलम्बन के भी दू भेद होवऽ हइ --
(I) आश्रय --जउन व्यक्ति के मन में भाव जगऽ
हइ ,आश्रय कहला हइ।
(II) विषय --जउन व्यक्ति इया वस्तु के प्रति भाव
उत्पन्न होवऽ हइ , विषय कहला हइ।
(ख) उद्दीपन ---- स्थाई भाव के जगवेवला इया
बढ़वेवला उद्दीपन कहला हइ।

(3) अनुभाव --आलम्बन व उद्दीपन विभाव के कारण
उत्पन्न शारीरिक चेष्टा अउ बाहर प्रकाशित
करेवला कार्य अनुभाव कहला हइ।

अनुभाव के प्रकार ------
(क) सात्विक (ख) कायिक (ग) मानसिक (घ)आहार्य

सात्विक -- सात्विक अनुभाव जे स्थिति के अनुरूप

खुद उत्पन्न हो जा हइ।
कायिक -- परिस्थिति के मुताबिक शारीरिक चेष्टा के कायिक अनुभाव कहल जा हइ।
मानसिक -- मन व हृदय से उत्पन्न हर्ष,विषाद आदि के जन्म मानसिक अनुभाव कहला हइ।
आहार्य -- बनावटी अलंकरण अउ भाव के अनुरुप वेश रचना आहार्य अनुभाव कहला हइ।

(4) संचारी व व्यभिचारी भाव ---- भाव के संचरण के संचारी भाव कहल गेल हे याने ई भाव आवइत - जाइत रहइ हइ।

कविता जगत में सभे मिलाके एगारह रस मानल जा हइ :

रस के नाम अउ स्थाई भाव

रस के नाम ----- स्थाई भाव

(1) शृंगार रस -- रति
(2) करुण --- शोक
(3) रौद्र --- क्रोध
(4) वीर ---- उत्साह
(5) भयानक ---- भय
(6) वीभत्स ---- घृणा
(7) अद्भुत ---- आश्चर्य
(8) शान्त ---- निर्वेद
(9) वात्सल्य ---- वत्सल
(10)हास्य ---- हास।
(11)भक्ति -- भगवद् भक्ति

रस के भेद :---------
शृंगार :--- जउन काव्य पंक्ति में प्रेमी - प्रेमिका के मिलन ,बिछुरन अउ ओकर सौन्दर्य वर्णन रहे ,ओकरा शृंगार रस कहल जा हइ।
शृंगार रस रसराज याने रस के राजा कहलावऽ हे।
शृंगार रस के उदाहरण--

सोंटल बदन
सोनपरी के

नरकटिया के पेड़ – रान

अउर केश
झूमइ कान्हा पर
तोड़इ संन्यासी के प्रण। (सोनपरी प्रबन्धकाव्य)

शृंगार रस के दू भेद होवऽ हे :---

(1) संयोग शृंगार--
पवन के संग नवकेरी तरुअन
हरसित हो मन से झूमइ।
नव कलियन के उभरइत कपोल
भौंरा रस ले- ले चूमइ।

(2) वियोग शृंगार ---
छोड़के बलमु गेलऽ अपने दिल्ली कमाय।
तोहरा बिना एक्को पल दिल नऽ लगे हाय।
से अइवऽ कहिया बलमु हमरा दऽ बताय।

करुण रस- कोय वस्तु अउर व्यक्ति के हानि के बोध जउन काव्य पंक्ति से होवऽ हे ,ओकरा के करुण रस कहल जा हइ।
उदाहरण---
कहलन सम्राट चन्द्रगुप्त क्षति होल हे भारी।
भाग्य होल छोट हम्मर मरल सुलक्षणा नारी।

रौद्र रस --- जउन काव्य पंक्ति से क्रोध के भाव के बोध होवऽ हे ,ओकरा रौद्र रस मानल गेल हे।

उदाहरण ---

धनानन्द भरल सभा में चाणक्य के कर देलन अपमान।
चाणक्य के दिल तिलमिला उठल तभिए लेलन प्रण ठान।
बिना चुकइले बदला अब अप्पन शिखा रखब हम खोल।
सत्ताहीन बना छोड़ब हम बदलब अब इतिहास भूगोल।

वीर रस ---जउन काव्य पंक्ति से युद्ध वर्णन ,शौर्य के ,दान के भाव जगे हे , वीर रस मानल गेल हे।

सन- सन तीर पवन - सन
चलइ लगल ताबड़तोड़।
दुश्मन सेना के देलक
वनवासी जवाब मुँहतोड़।
रह-रहके डँगुरी ओट से
चलवइ वनवासी तीर।
छलनी कर रहल लगातार
दुश्मन सैनिक के शरीर।

भयानक रस -- जे काव्य पंक्ति से भय के भाव जगे हे ,ओकरा भयानक रस मानल गेल हे।

पथ में देख विकराल ब्याल
दिल में भर गेल दहशत।
रस- रस उबड़ल जान
नमन करऽ हिअऽ शत- शत।

वीभत्स रस--- जे काव्य पंक्ति से घृणा के भाव जगे हे ,ओकरा वीभत्स रस मानल गेल हे।

छि: छि: ! कउन काम ई कइलऽ
सउँसे कुल के नाम हँसइलऽ।
सुन- सुन दे हथ हर कोय गारी
सच में तू एकरे अधिकारी।

अद्भुत रस -- जे काव्य पंक्ति पढ़के अचरज के भाव जगे,
ओकरा अद्भुत रस मानल गेल हे।

चन्द्रगुप्त के तेज देख होल अचम्भित सउँसे छात्र समाज।
शिष्य के करतब देख गुरु चाणक्य के हो रहलन नाज।

शान्त रस-- वैराग्य भाव के प्रधानता के शान्त रस मानल गेल हे।

नश्वर शरीर मोह त्याग के

पकड़ऽ सफल जिनगी के राह।
व्यष्टि त्याग करऽ समष्टिगत
सगरो होवत तोहर वाह- वाह।

वात्सल्य रस -- बचवन के सुन्दरता ,माय - बाप के बचवन ला दुलार, बचपन के खेल- तमाशा के भाव जगवेवला काव्य पंक्ति वात्सल्य रस के अन्तर्गत आवऽ हे।

माय गोद में ले बौआ के हलरावे दुलरावे
जखने जे मन में आवे गीत खुशी के गावे।
कखनो गोद खेलावे कखनो ओहनी झुलावे
कखनो लोरी सुना- सुनाके मैया मोद मनावे।

भक्ति रस -- ईश्वर के प्रति अनुराग के भक्ति रस कहल गेल हे।
उदाहरण --
जय भोले सरकार दहो दिल में दीया बार।
नेहिया उमड़इ तोहर चरनियाँ में।
रखहो हमरो तू अप्पन धेयनियाँ में।

-------------0---------0--------------

अलंकार

सामान्य जिनगी में अप्पन सुन्दरता बढ़वे ला मनुष्य जेबर के उपयोग करइ हे ओइसही कविता के सुन्दरता बढ़वे ला अउ जादे प्रभावी बनवे ला अलंकार के उपयोग कइल जा हइ।

कविता के सुन्दरता बढ़वे खातिर अलंकार होवऽ हइ। जब कविता के सुन्दरता शब्द के चलते बढ़ऽ हइ ,तऽ ऊ शब्दालंकार कहलावऽ हइ अउ जब कविता के सुन्दरता अर्थ के चलते बढ़ऽ हइ ,तऽ ऊ अर्थालंकार कहलावऽ हइ।

अलंकार के बारे में महाकवि केशव के कथन हे :

" भूषण बिनु न विराजई कविता वनिता मित्त "

अलंकार के कुछ उदाहरण---

(1)अनुप्रास अलंकार -- कविता के पंक्ति में वर्ण के आवृति के अनुप्रास अलंकार कहल जा हइ।

उदाहरण -- दिल दहल उठइ हे देख देश के सबाल के ।

(2)पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार -- कविता के पंक्ति में समान अर्थवला शब्द के आवृति के पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार कहल जा हइ ।

उदाहरण -- नव जुआन देश के जाग- जाग- जाग रे ।

(3)यमक अलंकार -- एक्के शब्द जेकर आवृति तऽ होवे बकि शब्द के अर्थ अलग - अलग रहे , यमक अलंकार कहलावऽ हे ।

उदाहरण --कल कल से ले काम
समस्या के निदान तू कइला।
ओझरावल गुत्थी जिनगी के
अपने आ सोझरइला।

ऊपर लिखल कविता पक्ति में --

कल = बीतल समय के बोध।
कल = बुद्धि ।

(4)श्लेष अलंकार -- जब कोय शब्द काव्य पंक्ति में एक्के तुरी आवे बकि ओकर अर्थ एक से जादे होवे ,तो श्लेष अलंकार कहलावऽ हे ।

उदाहरण --
अगे माय गे माय
ओकर मौगी हकइ कत्ते ठोराही
रोज भोरे उठके गारी दे हइ सोगाही ।

मौगी = सामान्य औरत/ पत्नी।
सोगाही = विधवा औरत / एक सौ गाही ।

(5)उत्प्रेक्षा अलंकार -- जब काव्य पंक्ति में कोय व्यक्ति इया वस्तु के कोय व्यक्ति इया वस्तु से तुलना के संभावना व्यंजित होवे ,तो उत्प्रेक्षा अलंकार कहलावऽ हे।
एकरो में वाचक शब्द होवे हे ।

वाचक शब्द -- ज्यों ,जनु ,मनु ,मानो ।

उदाहरण -
(1) रसे- रसे सपना साकार हम्मर होल
ज्यों पुनियाँ के चान ।
होल पढ़ाय खत्म जहिया से
देवइत रहलउँ ध्यान।

(2) पछिया हावा लेत जनु परना
गिरा देलक नीचे पारा।
थउआ होल जाने देहिया गे
हाय चले नय कुछ चारा।

(6)उपमा अलंकार --- जब कोय व्यक्ति इया वस्तु के तुलना कोय व्यक्ति इया वस्तु से होवऽ हे इया उपमेय के उपमान के समान बतावल जाय तऽ उहाँ

उपमा अलंकार होवऽ हे।

उपमा अलंकार के अंग ---
(क) उपमेय - जेकर तुलना कइल जाय हे,
ओकरा उपमेय कहल गेल हे।

(ख) उपमान -- जेकरा से तुलना कइल जा हइ,
ओकरा उपमान कहल गेल हे।

(ग) साधारण धर्म-- समान गुण इया विशेषता के
समान धर्म कहल जा हइ।

(घ) वाचक शब्द --जइसन ,नियन , सरिस आदि।

उदाहरण --
(1) चान नियन तोर चकमक चेहरा
रूप के आन्ही आनो नञ।

ऊपर लिखल वाक्य में चान के तुलना चेहरा से कइल
गेल हे।

(2) लाल कहइतइ ऊ भारत के
जइसे पान मगहिया।

(7)रूपक अलंकार --- जब कोय दू वस्तु में अभिन्नता के
बोध होवे माने उपमा अउ उपमान में अभिन्नता रहे
हे। एकरा में वाचक शब्द नञ होवे हे तऽ ओकरा
रूपक अलंकार कहल जा हइ।

उदाहरण --

(1) बदरिया गावे हे कजरिया झूम गगन के अंगना
रात के समैया में गगन के तलैया में
खिलल फूल तरेगना के रंग- विरंगना।

(2) सरंग-सरोवर में डूब रहल सूरज।
आशा- सरोरुह के आनन मुरझा गेल।

(8)अतिशयोक्ति अलंकार -- जे काव्य पंक्ति में कोय बात
के बहुते बढ़ा-चढ़ा के कहल जाय हे, ओकरा
अतिशयोक्ति अलंकार कहल जा हइ।

उदाहरण --अन्हड़ बन अइबो
पहाड़ के भी उड़ा ले जइवऽ।
पलक झपकते सात समँद के
पार तुरन्त हो जइवऽ।
हम ही महावीर के वंशज
ताकत हम्मर नञ जानऽ हा।
हमरा नञ पहचानऽ हा।

(9)मानवीकरण अलंकार --- जब निर्जीव के सजीव नियन
काम करइत बतावल जाय इया प्रकृति के नदी ,पहाड़ , पेड़- पौधा ,बादल ,हवा
आदि पर मानवीय भाव के
आरोपण मानवीकरण अलंकार कहलावऽ हे।

उदाहरण--

बादल के रथ पर सवार हो
आ रहल वर्षा रानी तू देख ला।
स्वागत में बनल इन्द्रधनुष भी परेख ला।
नवकेरी तरुअन झुक अभिनंदन गावे हे।
खुशी के समन्दर समेट के लावे हे।

(10) वक्रोक्ति अलंकार -- वक्रोक्ति शब्द के अर्थ वक्र उक्ति होवे हे याने जानबूझ के
वक्ता के कथन से अलग अर्थ लेवइ के विधान हे ,ओकरा वक्रोक्ति अलंकार कहल जा
हइ।

उदाहरण --

(1) नाम तोहर हे श्याम तो तू जा राधा के खोजऽ
इहाँ तू कइसे पहुँच गेलऽ ,इहाँ नऽ हे कोय राधा।

(2) तू नटवर तऽ जाके नाचऽ।
इहाँ ज्ञान तू नञ वाँचऽ।

(11) दृष्टांत अलंकार-- दृष्टांत के अर्थ उदाहरण होवे हेजब कविता में कोय वाक्यांश उदाहरण के काम करे ,ओकरा दृष्टांत अलंकार कहल गेल हे।

जइसे ---

(1) घोड़ा संगे बेंगा नाल ठोकइलक
बेरथ जान गमइतइ ।
अइसनो निपट गँवार होवे हे
के एकरा समझइतइ ?

(2) मारइत हा ढाही पहाड़ में
चूर- चूर हो जइवऽ।
ऊ तऽ धन्ना सेठ नगर के
ओकरा बिगाड़ की पइवऽ ?

(12)अन्योक्ति अलंकार --- जब एक्के काव्य पंक्ति के एक से जादे अर्थ होवे हे ,ओकरा अन्योक्ति अलंकार कहल गेल हे ।
अन्योक्ति के मतलब होवे अन्य उक्ति माने अउर दोसर बात जे वक्ता कहे ला चाहऽ हथिन।

उदाहरण ---

जिनगी के अंगना में हो गेल भोर।
खुशी रस भरल हे पोरे- पोर ।

*********0*********0*************

------------- : रचना :----------------

व्याकरण के अन्तर्गत निबन्ध लेखन, पत्र लेखन , सूचना लेखन अउर संवाद लेखन पर भी विचार करइ के हे। एकर जानकारी भी जरूरी होवे हे । पहिले हम निबंध लेखन पर विचार करब कि निबंध लेखन में कउन- कउन बात पर ध्यान देवे के हे , जेकरा से एक उत्कृष्ट निबंध के रचना संभव हो सके।
कोय भी निबंध के उत्कृष्ट लेखन खातिर शब्द चयन,
मुहावरा के उपयोग अउ उद्धरण के तौर पर काव्य पंक्ति के प्रयोग अतीव आवश्यक हे। निबंध लेखन के श्रीगणेश 'भूमिका' अउर समापन 'उपसंहार' से होवे के चाही। 'भूमिका' के मतलब निबंध के विषय वस्तु के सामान्य जानकारी से हे अउर 'उपसंहार ' के मतलब 'निष्कर्ष 'होवे
हे अर्थात निबंध के विषय वस्तु के बारे में अप्पन मंतव्य से हे ।
हम मगही भाषा में निबन्ध लेखन के उदाहरण भी पेश कर रहलऊँ --

सरस्वती पूजा

या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेण संस्थिता
नम: तस्यै नम: तस्यै नम:तस्यै नमो नमः।

हम्मर देश भारत ज्ञान के धरती हे अउर ज्ञान के देवी माता सरस्वती के मानल गेल हे जिनकर कृपा मिलले बिना ज्ञान प्राप्ति संभव नञ हे। हमनी ज्ञान प्राप्ति खातिर मैंयासरस्वती के सालों भर पूजा करऽ हिअइ जेकरा भक्ति भाव कहल जा हइ ।साल में एक खास दिन भी हे जउन दिन सरस्वती माता के विशेष पूजा होवे हे ।ई दिन के सरस्वती माता के आविर्भाव दिवस मानल गेल हे । सगुण भक्ति के उपासक सरस्वती माता के मूर्ति के पूजा बड़ धूम-धाम से करऽ हथिन।

सरस्वती माता के ज्ञानदा, शारदा ,भारती अउ वीणावादिनी आदि नाम से भी जानल जा हइ।सरस्वती के मूर्ति जे मूर्तिकार माटी से बनवे हथिन ओकरा में मैया शारदा के साथ हंस अउर मयूर पक्षी भी होवे हे। हंस पक्षी के मैया शारदा के सवारी मानल गेल हे।कुछ मूर्ति में हंस पर सवार होवे हथिन तो कुछ में मैया शारदा के आसन कमल के फूल होवे हे। प्रतिमा में मैया सरस्वती वीणा बजवइत रहइ हथिन। मैया के एक हाथ में किताब तो जरूरे होवे हे। ई चलते मैया सरस्वती के वीणावादिनी अउ पुस्तकधारिणी भी कहल गेल हे। सरस्वती मैंया साहित्य अउ संगीत कला के अधिष्ठात्री देवी हथिन ।सरस्वती मैया के कृपा जिनकरा पर होवऽ हे, उनकर जिनगी के अंगना में सुख-शान्ति के सरिता प्रवाहित रहे हे । ऊ चैन के वंशी बजवऽ हथिन।

ज्ञान प्राप्ति खातिर मैया सरस्वती के पूजा तऽ सभे लोग करऽ हथिन बकि सरस्वती पूजा पर खासकर विद्यार्थी लोगन के जादे ध्यान रहे हे। विद्यार्थी लोग सरस्वती पूजा वसंत पंचमी के दिन करऽ हथिन। वसंत पंचमी माघ शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि के कहल गेल हे याने माघ महीना के दोसर पख के पंचमी तिथि। ई दिन तऽ इसकुल, कॉलेज, कोचिंग संस्थान में विशेष रूप से सरस्वती माता के मूर्ति के पूजा जरूरे होवे हे। पूजा के साथ प्रसाद वितरण अउ सांस्कृतिक काजकरम होवऽ हे। प्रसाद में गजरा ,बेर, मिसरीकंद, बून्दिया के साथे फल के भी इन्तजाम रहे हे। गाँव - शहर के लोग इहे वसंत पंचमी से होली त्योहार के भी श्रीगणेश मानऽ हथिन।

सरस्वती पूजा तऽ लोग करऽ हथ बकि ई औंसर के बड़ दुरुपयोग भी होवे लगल। डीजे के कानफाड़ू आवाज से अनोर कर देवऽ हथ। ई औसर पर अश्लील भोजपुरी संगीत गायन तऽ सरस्वती पूजा के रूप बिगाड़ देलन हे। एकरा पर जबरदस्त तरीका से रोक लगावे के जरुरत हे बकि ई तरफ लोग के ध्यान नञ हे। हरेक टोला -मुहल्ला सभे जगह एक्के हालत हो जा हे। ज्ञान अउर विवेक के देवी सरस्वती के पूजा के औसर पर अज्ञान अउ विवेकहीनता के नंगा नाच पर रोक जरूरी हे। हम तऽ ई संदर्भ में कहब ---

ज्ञान के देवी सरस्वती के पूजइ हथ सभे लोग।
बकि ज्ञान के अभिप्राय से मुँह मोड़ने हथ लोग।

------0------0------

महात्मा गाँधी

विश्ववंद्य बापू जिनकर गुंजित जहान में गौरव गान।
अइसन सपूत के पाके भारत माता बन गेल महान।

सत्य ,अहिंसा अउ विश्वबंधुत्व के संदेशवाहक महात्मा गाँधी के सऊँसे जहान जानऽ हे। भारत देश के स्वतंत्रता आन्दोलन के सर्वमान्य नेता महात्मा गाँधी के पहचान एक प्रबुद्ध विचारक, शिक्षा शास्त्री, अर्थशास्त्री अउ सजग साहित्यकार के भी हइ। इनकर आध्यात्मिक व्यक्तित्व सदा- सर्वदा प्रेरणा के स्रोत बनल रहत। इहे चलते सऊँसेसंसार महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व- कृतित्व के सामने माथा नबावे हे। भारत मैया के अइसन सपूत पर काहे नञ गौरव के अनुभूति होवे जे भारत मैया के कीर्ति पताका सऊँसे संसार में फहरइलन।

महात्मा गाँधी के नेताजी सुभाषचंद्र बोस 4 जुलाई, 1944 ई0 के रंगून रेडियो से 'राष्ट्रपिता' शब्द से सम्बोधित कइलथिन अउर विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर 'महात्मा' कहलन।चंपारण सत्याग्रह के क्रम में राजकुमार शुक्ल ' 'बापू' कहके सम्मान देलथिन। महात्मा गाँधी के असली नाम मोहनदास करमचंद गाँधी हे जिनकर जन्म गुजरात प्रान्त के पोरबंदर नाम के जगह में 02 अक्तूबर ,1869 ई0 के होलन।महात्मा गाँधी पिता के नाम करमचन्द गाँधी अउ माता के नाम पुतलीबाई हलइ।महात्मा गाँधी इंग्लैंड से बैरिस्टरी के शिक्षा पइलन अउ कुछ दिन बैरिस्टरी भी कइलन।बैरिस्टरी के क्रम में दक्षिण अफ्रीका गेलन।उहाँ भी ब्रिटिश शासक के जुल्म के प्रति संघर्ष कइलन। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह, उपवास आदि अहिंसात्मक हथियार के उपयोग करके ब्रिटिश शासक के जुल्म से आम अवाम के मुक्ति देलइलन।

1921 ई0 से महात्मा गाँधी भारत के आजादी के आन्दोलन के अगुअय करऽ लगलन। इनकर अगुअय में आजादी के आन्दोलन जन आन्दोलन बन गेल।गाँधी जी के आह्वान पर देश के ढेरों बैरिस्टर आजादी के आन्दोलन में शरीक हो गेलन।आजादी के आन्दोलन में गाँधी जी सविनय अवज्ञा आन्दोलन ,सत्याग्रह अउ उपवास के हथियार बनइलन। एकर साथे रचनात्मक आन्दोलन भी संग साथ चलइत रहल। 1942 ई0 के 'करो या मरो' आन्दोलन अंग्रेजी सत्ता के जड़ हिला देलक।ई तरह से 15 अगस्त, 1947 के देश आजाद हो गेल।

आजादी के आन्दोलन में गाँधी जी के जे छवि बनल एकर अलावे गाँधी जी आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक सुधार के विचार भी समाज के सामने रखलन। यंग इंडिया ,हरिजन पत्रिका के अलावे गाँधी जी आत्मकथा लिखलन।अउर किताब भी लिखलन जेकरा से गाँधी के साहित्यिक व्यक्तित्व भी सामने अइलइ।

इ तरह गाँधी जी के स्वतन्त्रता सेनानी के साथ आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक छवि भी संसार के सामने हे।गाँधी अप्पन हरेक रूप में पूजनीय व्यक्तित्व के अधिकारी हथ।
-------0---------0--------

हम्मर देश भारत

हम्मर देश भारत दुनिया के बहुते पुराना देश हे जेकरा विश्वगुरु होवे के गौरव मिलल हे।ई देश भगवान राम, कृष्ण ,गौतम बुद्ध अउ वर्द्धमान महावीर के देश हे।महात्मा गाँधी अउ स्वामी विवेकानंद के देश हे।ई बात के हम गौरव महसूस करऽ हिअइ। एतनइ नञ , हम्मर देश तरह- तरह के धन- सम्पदा से भरल-पुरल हे। हम्मर देश के प्राकृतिक सौंदर्य भी मनमोहक हे।अप्पन देश भारत खातिर हम्मर कहनाम हे ---

हम्मर उहे देश जहाँ गंगा नदी प्रवाहित हे।
हम्मर उहे देश जहाँ के लोग होवे उत्साहित हे।

भारत कृषि प्रधान देश हे।इहाँ के सत्तर प्रतिशत लोग के जीविका के साधन कृषि हे।भारत में सालो - भर कोय-न-कोय फसल खेत के सुन्दरता में चार चाँद लगवइतरहऽ हे। इहाँ कृषि जुकुर उर्वर भूमि हे तऽ राजस्थान के मरूभूमि भी हे। छह किसिम के ऋतु भारत के कृषि के सम्पन्नता प्रदान करऽ हे। भारत के कृषि मौसम आश्रित हे। अब ले कृषि में बहुते बदलाव हो गेला।कृषि के मशीनीकरण से किसान के बहुते लाभ हो रहल हे। कृषि के विकास खातिर सरकार भी सजग हे।

भारत विभिन्नता में अभिन्नता के देश हे ।इहाँ तरह- तरह के धर्म, जाति ,भाषा अउ विचार के लोग रहइ हथ बकि सभे लोग मेल- जोल से जिनगी जीअइ में विश्वास करऽ हथ।साम्प्रदायिक अउ सामाजिक सद्भाव भारत के विशेषता हे। इहाँ के जिनगी में प्रेम के गंगा बहे हे।इहाँ के लोगन कहऽ हथ ---

ज्योति से ज्योति जगावइत चलऽ।
प्रेम के गंगा बहावइत चलऽ।

भारत के धरती रत्नगर्भा हे ।तरह-तरह के खनिज हम्मर देश के धरती गर्भ में मौजूद हे। हम्मर देश के धरती के वीर प्रसवा भी कहल गेल हे ।ई धरती महाराणा प्रताप ,वीर शिवा जी अउ गुरु गोविंद सिंह के भी हे जे अप्पन शौर्य ला मशहूर रहलन। विश्वविजय के सपना देखेवला सिकन्दर के पानी पिलवेवला सपूत भी भारत मैया के सपूत हलन। ज्ञान - विज्ञान सभे क्षेत्र में भारत के अप्पन महत्त्व हे।ज्ञान- विज्ञान के क्षेत्र में इहाँ के विद्वान देश- विदेश के सेवा में नाम कमा रहलन हे। अइसन अप्पन देश भारत के हमरा गौरव हे।
====0====0====

खेल के महत्त्व

मानव सभ्यता के विकास के साथे खेल के संगति में मनुष्य आ गेलइ।मानसिक मनोरंजन अउ शारिरिक तन्दुरुस्ती ला खेल बहुते उपयोगी है। खेल हमनी के अनुशासन अउ जिनगी के राह में मेलजोल के महत्त्व भी समझावे हे। ई से निर्विवाद रूप से खेल के महत्त्व सभे लोग स्वीकार करऽ हथिन। खेल बचवन के बड़ प्रिय होवे हे।किशोर अउ युवा वर्ग के लोग भी खेल ला दीवाना बनल रहऽ हथिन।

खेल कत्ते तरह के होवे हे।जइसे - आउटडोर गेम अउ इनडोर गेम।आउटडोर गेम ला खेल के मैदान जरूरी हे बकि इनडोर गेम तो कोठरी के अन्दर भी संभव हे। लूडो,कैरम,शतरंज, बैडमिंटन आदि इनडोर गेम हे तऽ कबड्डी ,फुटबाल, वालीबॉल, क्रिकेट आउटडोर गेम हे।

कैरम, शतरंज मानसिक विकास के खेल हे तऽ कबड्डी ,फुटबाल, क्रिकेट शारीरिक विकास के खेल हे।खेल कोय तरह के होवे बकि खेल में अनुशासन के अहमियत हे। आजकल खेल के महत्त्व बहुते बढ़ गेल हे। अखने विश्व स्तर पर खेल के आयोजन सालो होवइत रहऽ हे।

खेल मनोरंजन, मानसिक विकास , शारीरिक विकास के साथ आर्थिक उपलब्धि से भी जुड़ गेल हे। दुनिया के कुछ देश में तो खेल- खेल में शिक्षा' के भी प्रावधान हे। हरेक इसकुल में पढ़ाय के रुटीन में खेल के पीरियड बन गेला। अब समझ सके हे कि खेल आधुनिक जिनगी में कत्ते अन्दर तक प्रवेश के गेल हे।

खेल मानवीय गुण के विकास भी करे हे । सामूहिक भावना के भी बढ़ावा दे हइ। आत्मनिर्भरता अउ प्रतिस्पर्धा के भी पाठ पढ़ावऽ हे। एकाग्रता अउ प्रसन्नचित्तता भी सिखावे हे। सुन्दर स्वास्थ्य ला भी खेल जरूरी हे।इहे सब कारण हे कि लोग आजकल खेल के प्रति लट्टू हथिन। खेल के महत्त्व एतना बढ़ गेल कि हम कहे ला चाहब --
खेल बिना जिनगी हे सूना ।

जिनगी के सभे क्षेत्र में खेल धाक जमइले हे।
रोज- रोज अब खेल के आयोजन कइले हे ।

=====0=====0=====

बरसात ऋतु

****

अइलइ बरसा ऋतु तऽ बदरिया सरंग में नाचे हे।
बरसा के महिमा के बदरा सगरो घूमके बाँचे हे ।

भारत में कुल छौ ऋतु हे जेकरा में बरसा ऋतु बहुते महत्वपूर्ण हे। तभिए तो बरसा ऋतु के ऋतुअन के रानी कहल गेल हे।अषाढ़,सावन, भादो महीना बरसात के अवधि होवे हे।बरसा ऋतु के आगमन पर लगे हे धरती हरियर चुनरी पहिन लेलक हे। सच में बरसात के मौसम बड़ मनोहारी होवे हे। बरसा ऋतु किसान के भी प्रिय ऋतु हे अउ कवियन के कीऽ कहना ? कवियन बरसा ऋतु के सुन्दरता अउ ओकर उपयोगी स्वरूप पर ढेरों कविता लिख देलन ।

बरसात ऋतु के आगमन गरमी के मौसम के बाद होवऽ हे याने अषाढ़ महीना से होवऽ हे अउ समापन आश्विन महीना तक ठेक जा हइ । गरमी से तबल धरती पर जब बरसा के रिमझिम फुहार बरसे हे तऽ चौतरफा सोंध सुगंध पसरऽ हे जे बड़ मनभावन होवऽ हे।इहे बरसा ऋतु में सरंग में बादल के देखते मातर मयूर पक्षी अप्पन सतरंगा पंख के वृताकार रूप देके नाच उठइ हे जेकरा देख के सबके मन आनन्द से भर जाय हे।अउर जब इहे मौसम में सरंग में सतरंगा इन्द्रधनुष के सुरम्य छटा छिटकइ हे तऽ ओकर

सुन्दरता के वर्णन के सामर्थ्य शब्द से संभव नञ।
बरसा ऋतु के प्रभाव से नदियन बौराल फिरइ हे।

सऊँसे धरती हरियर कचूर हो जाय हे । गरमी के मौसम के बाद के बरसाती शीतल बयार आनन्दविभोर कर दे हे।बरसा के मौसम में किसान के खुशी आसमान छूअइ लगे हे ।कृषि कार्य धमकुच्चर होवे लगे हे। खेत में धान के रोपा करइत रोपनियन के गावल गीत के झंकार मन के तार-तार झनझना देवऽ हे। मेढ़क के टर-टर ध्वनि तखने सोहावन लगे हे ।

जब मूसलधार बरसा होवऽ हे तऽ प्रकृति के डरावन रूप सामने आवऽ हे।बाढ़ के दृश्य देख के मन काँप उठे हे। धान के रोपल फसल माटी में मिल जा हे।गाँव- घर- शहर सभे जगह पानी- पानी होवे लगे हे।समझऽ तऽ त्राहिमाम के हालत हो जाहे ।बाढ़ के विभीषिका बड़ नोकसान कर दे हे ।एकरे कहे हे धोवल भैंसिया पाँको में।
ई तरह हम कहब कि बरसा ऋतु मनभावन हे । खेती ला बड़ जरूरी हे तऽ ओकर विनाशकारी लीला बड़ क्षति पहुँचावऽ हे। तभियो बरसा के जे महात्म्य हे ओकर कोय कीऽ बराबरी करत ।बरसा सऊँसे सृष्टि के प्राण हे।

====0====0====

—:पत्र लेखन :—

पत्र लेखन के भी अप्पन महत्त्व हे जेकरा जानले बिना पत्र के लेखन के उद्देश्य में सफलता नञ संभव हे ।पत्र के भाषा सरल सहज होवे चाही कि पत्र लेखन के मकसद आसानी से समझ में आ सके । पत्र लेखन के तौर-तरीका भी जानइ के चाही कि पत्र देखते मन प्रमुदित हो जाय ।

लिखावट के सुन्दरता भी बहुते जरुरी हे ।

पत्र भी कत्ते तरह के होवे हे।कुछ पत्र तो अप्पन सगा- सम्बन्धी के लिखल जाय हे तऽ कुछ सरकारी विभाग के पदाधिकारी के।

सबाल (1) अप्पन पढ़ाय के बारे में बाबूजी के चिट्ठी लिखऽ।

वजीरगंज,
08/02/2022

पूजनीय बाबूजी,
गोड़ लागी ।

अपने के हाथ से लिखल चिट्ठी मिलल।पढ़के समाचार मालूम होल।मन खुश हो गेल। हमरो समाचार निम्मन हे। मन लगाके पढ़ रहलऊँ हे।

अपने हम्मर पढ़ाय के बारे में पूछलथिन ।हम्मर पढ़ाय ठीक ढंग से हो रहल हे। गणित अउ अंग्रेजी विषय के ट्यूशन भी हो रहल हे। हम्मर सालाना इम्तिहान पंद्रह दिन बाद शुरू होवत । हमरा हर साल के बनिस्पत अउर अच्छा रिजल्ट के आशा हे।

बाकी सभे ठीक हे। चिन्ता के कोय बात नञ ।
मम्मी के हम्मर प्रणाम। छोटे के आशीष ।

प्यारा पुत्र
मोहन ।
==========0=================

सबाल (2) सरस्वती पूजा के बारे में अप्पन दोस्त के चिट्ठी लिखऽ ।

वजीरगंज,
08/02/2022

प्रिय दोस्त ,
जय हिन्द।

तोहर भेजल चिट्ठी मिलल।चिट्ठी पढ़के मन मगन हो गेल।सभे समाचार ठीक हे। पढ़ाय-लिखाय ठीक से हो रहल हे। स्वास्थ्य भी बड़ बेस हे। रसे- रसे कोरोना के असर घट रहल हे। खुशी के बात हे कि इसकुल खुल गेल ।

हम्मर इसकुल में सरस्वती पूजा के आयोजन नञ होवे हे बकि हम्मर मुहल्ला में मैया सरस्वती के पूजा धूम धाम से सम्पन्न हो गेल ।अउर जगह नियन हम्मर मुहल्ला के पूजा में लाउडस्पीकर के शोर नञ हल।बहुते मद्धिम आवाज में सरस्वती वंदना के गीत गुंजइत रहल।

रात में नाटक के आयोजन हल बकि ओकरा में हमनिये नृत्य कइलिअइ। अश्लीलता के जगह शालीनता पर सभे के ध्यान केन्द्रित हल।

सोमवार दिन सांझ पहर बगले के नदी में प्रतिमा के विसर्जन हो गेल। विसर्जन के समय नदी कछार बहुते लोग आ गेलन हल।सभे काजकरम शान्तिपूर्ण सम्पन्न हो गेल।

बाकी सभे ठीक- ठाक हे । घर के समाचार भी ठीक हे । तोहर पापा- मम्मी के हम्मर

प्रणाम।

शुभकामना के साथ ---

तोहर यार
महेश्वर
==========0=======0===========

सबाल (3) अप्पन इसकुल के हेडमास्टर के दू दिन के अवकाश खातिर आवेदन पत्र लिखऽ।

सेवा में ,

श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय,
संस्कार इंटरनेशनल इसकुल, वजीरगंज (गया) ।
द्वारा ,
वर्ग शिक्षक महोदय ।

विषय -- **दू दिन ला अवकाश के संबंध में ।**

महाशय ,
सविनय निवेदन हइ कि हम आँख के चिकित्सा खातिर पटना जायवला हिअइ । ई चलते अप्पन वर्ग में तिथि 10/02/2022 अउर 11/02/2022 के गैरहाजिर रहबइ। ई लेल श्रीमान प्रधानाध्यापक महोदय से सादर निवेदन हइ कि दू दिन ला अवकाश स्वीकृत करके यश के भागी बनथिना। एकरा ला हम अपने के आभारी रहबइ।

आज्ञाकारी छात्र –

तिथि: 08/02/2022 **नाम - रमेश कुमार**
वर्ग – दशम
क्रमांक–29

=========0======0=========

सबाल (4)) नगर के स्वच्छता लागी नगर परिषद के अध्यक्ष के आवेदन पत्र लिखऽ।

सेवा में ,
श्रीमान अध्यक्ष महोदय,
नगर परिषद, वजीरगंज (गया) ।

विषय -- **नगर के स्वच्छता के संबंध में ।**

महाशय ,
ऊपर लिखल विषय के संबंध में निवेदन हइ कि नगर के हरेक वार्ड में गंदगी पसरल हे जेकरा से तरह- तरह के बीमारी पसरइ के खतरा बनल हे अउ नगर के सुन्दरता भी खत्म हो गेल हे। 'स्वच्छ नगर स्वस्थ जीवन' लागी स्वच्छता बड़ जरूरी हे बकि सफाई ला सही व्यवस्था के घनघोर अभाव लऊके हे।

ई खातिर श्रीमान से हाथ जोड़ के निहोरा हे कि नगर के जन जीवन निम्मन रहे एकरा ला स्वच्छता के व्यवस्था पर ध्यान देवल जाय।

विश्सभाजन

क कुमार
वार्ड न0 - 8
11/02/2022

========0======0=========

सबाल (5) अपने संध्या माधवी हथिन। युगधारा प्रकाशन, लखनऊ 'जिनगी के अंगना' आत्मकथा छपे ला भेजलथिन हल बकि पुस्तक अभी तक नञ मिल सकलइ ।एकरा ला सबधित प्रकाशन के प्रबधक के 120 शब्द में आवेदन पत्र लिखथिन।

प्रेषक:
संध्या माधवी
शेखपुरा (बिहार)।

तिथि : 11/ 02/ 2022

सेवा मे ,

प्रबंधक ,
युगधारा प्रकाशन ,लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

विषय -- **'जिनगी के अंगना' आत्मकथा पुस्तक अविलम्ब भेजइ के संबंध में ।**

महाशय ,
ऊपर लिखल विषय के संबंध में कहइ के हे कि पाँच महीना पहले याने सितम्बर, 2021 में अपने के प्रकाशन में हम अप्पन किताब ' जिनगी के अंगना' छपे ला ऑर्डर कइलिअइ हल । छपे ला अर्धराशि भी भेजल गेल जेकर प्राप्ति रशीद भी हमरा मिल गेल बकि पाँच महीना के लमहर समय के बाद भी किताब आज तक नञ मिल सकल हे। कुरियर के सेवा शुल्क भी भेज देलऊँ।
ई खातिर निहोरा हे कि हम्मर छपल किताब जल्द - से- जल्द भेज देवल जाय ।

विश्वासभाजन

संध्या माधवी
शेखपुरा (बिहार)
मो0 न0 : 8877665555

==========0======0=========

सबाल (6) कोरोना महामारी के संक्रमण रोके ला सरकार इसकुल/ कॉलेज बन्द कर देलन बकि अब कोरोना महामारी के असर समाप्त होवे के खबर मिल रहल हे। ई से कोय समाचार पत्र पहमा सरकार से इसकुल/ कॉलेज खोले के आदेश निर्गत करे ला निहोरा संबंधी पत्र लिखऽ।

प्रेषक :
विनय विपिन
शेखपुरा (बिहार) ।

तिथि : 11 /02/2022

सेवा में ,
सम्पादक महोदय ।
दैनिक जागरण, पटना (बिहार)।

विषय -- **इसकुल/ कालेज के पढ़ाय शुरु करे के संबंध में ।**

महाशय,

अपने लोकप्रिय समाचार पत्र दैनिक जागरण पहमा बिहार सरकार से इसकुल/ कॉलेज में पढ़ाय शुरु करे आदेश निर्गत करे के संबंध में निहोरा हे कि अब तऽ सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना के संक्रमण खत्म हो गेल हे।ओइसे भी कोरोना महामारी चलते इसकुल/ कॉलेज बन्द कर देला से पढ़ाय के हाल एकदम्मे खस्ता हो गेल हे। ई से जरूरी हे अब इसकुल/ कॉलेज के भी खोले के स्वीकृति प्रदान कइल जाय।

ई लागी सम्पादक महोदय से निहोरा हे कि अप्पन समाचार पत्र में ऊपर लिखल बात प्रकाशित करके सरकार के ध्यान आकृष्ट करइ के कृपा करथिन । एकरा ला हम आभारी रहब।

विश्वासभाजन

विनय विपिन।
शेखपुरा (बिहार)।

==========0=====0==========

सूचना लेखन :——

- सूचना लेखन अइसन भाषा में होवे कि लोग आसानी से समझ सकथ।
- सूचना के भाषा सरल सहज रहे के चाही।
- लिखावट पढ़े जुकुर होवे।
- सूचना लमहर नञ, संक्षेप में रहे।

==================================

सबाल (1) भाषण प्रतियोगिता के आयोजन के सूचना लिखऽ।

संस्कार इंटरनेशनल इसकुल, वजीरगंज

सूचना

दिनांक : 10/2/22

भाषण प्रतियोगिता के आयोजन

विद्यालय के सभे छात्र- छात्रा के सूचित कइल जा हइ कि विद्यालय के सभागार में भाषण प्रतियोगिता के आयोजन दिनांक 25 / 2/2022 के 01:30 बजे से होतइ जेकर विषय ' कोरोना : लक्षण अउ बचाव' हइ।

इच्छुक छात्र- छात्रा विद्यालय के सांस्कृतिक परिषद के सचिव के एकरा में भाग लेवे ला आवेदन पत्र 22/2/22 तक दे दऽ।

सचिव

सांस्कृतिक परिषद।

==================================

सबाल (2) पुस्तक प्रदर्शनी के आयोजन के बारे में सूचना लिखऽ।

सर्वोदय पब्लिक इसकुल, गया (बिहार)

सूचना

तिथि : 05/6/2022

पुस्तक प्रदर्शनी के आयोजन

विद्यालय के सभे शिक्षक अउ विद्यार्थी के सूचित कइल जाय हे कि गर्मी छुट्टी के ओसर पर तिथि 15 /6/2022 से 21/6/2022 तक विद्यालय परिसर में पुस्तक प्रदर्शनी के आयोजन होवत।

सभे लोग प्रदर्शनी में पधार के लाभ उठावऽ।

- मुख्य आकर्षण: 35 प्रतिशत कम कीमत पर पुस्तक उपलब्ध।

विजय विपिन

सचिव

छात्र परिषद

==================================

सबाल (3) विद्यालय में नि:शुल्क पुस्तक वितरण होवे के बारे में सूचना लेखन करऽ।

सिटी पब्लिक इसकुल, मानपुर (गया)

सूचना
तिथि : 10/2/22

नि: शुल्क पुस्तक वितरण

विद्यालय के सभे छात्र- छात्रा के सूचित कइल जाय हे कि एक लाख से कम सालाना आय के प्रमाण पत्र प्रस्तुत करेवला छात्र- छात्रा के प्रधानाचार्य पहमा तिथि 25/2/22 के सबेरे दस बजे से तीन बजे तक नि:शुल्क पुस्तक प्रदान कइल जइतऽ। एकरा ला प्रमाण पत्र प्रधानाचार्य कार्यालय में तिथि 22/2/22 तक जमा कर दऽ।

विनय विजय
सचिव
छात्र परिषद।

==================================

सबाल (4) विद्यालय के भ्रमण कार्यक्रम के आयोजन के बारे में सूचना लेखन करऽ।

ज्ञानोदय सीनियर सेकेंडरी इसकुल, बक्सर (बिहार)

सूचना
दिनांक: 14/2/22

वाराणसी(उत्तर प्रदेश) भ्रमण प्रोग्राम

विद्यालय के सभे छात्र- छात्रा के सूचित कइल जा हइ कि विद्यालय तरफ से काशी विश्वनाथ, वाराणसी के भ्रमण
वातानुकूलित बस से तिथि 21/3/22 के निर्धारित हइ जेकरा ला तीन हजार रुपया प्रति छात्र प्रधानाचार्य कार्यालय में 18/3/22 तक जमा करे के हे।

इच्छुक छात्र- छात्रा निर्धारित तिथि तक राशि जमा करके भ्रमण कार्यक्रम में भाग ले सकइ हथ।
ज्ञान रंजन
हेड बाय

संवाद लेखन :—

संवाद लेखन के मतलब होवऽ हे वार्तालाप। दू अदमी के बीच के बातचीत संवाद लेखन कहला हे। संवाद के भाषा सरल सहज होवे अउ प्रभावकारी होवे कि संवाद पढ़ेवला कहल बात से प्रभावित हो सके। संवाद छोट- छोट वाक्य में लिखे के हे।

सबाल (1) अप्पन जिनगी के लक्ष्य के बारे में दूगो दोस्त के बातचीत के संवाद लेखन करऽ।

रंजन : मित्र गुंजन ! बारहवाँ वर्ग पास करके कीऽ करे ला सोंचला ?
गुंजन : हम तऽ अप्पन लक्ष्य पहिलहीं तय कर लेलिअइ। हमरा डाक्टर के पढ़ाय पढ़े के हे।
रंजन : डाक्टर काहे ?
गुंजन : डाक्टर बनके हमरा जनसेवा करे के हे। डाक्टर रोवइत- तड़पइत मरीज के चेहरा पर मुस्कान लौटा देवइ हे।
रंजन : कुछ डाक्टर तऽ डाक्टर होके भी हैवान होवे हे।
गुंजन : हमरा निम्मन डाक्टर बने के हे। तू अप्पन लक्ष्य बतावऽ।
रंजन : एतना मेहनत तो हम्मर वश के बात नञ हे। डाक्टर - इंजीनियर बने में बड़ मेहनत हे।
गुंजन : बिना मेहनत के सफलता संभव नञ हे।
रंजन : हम तऽ नेता बनके देशसेवा करब।
गुंजन : नेता बनना भी आसान नञ हे। तोहरा तोहर लक्ष्य ला हार्दिक शुभकामना।

****** ******* ******* *****

सबाल (2) परीक्षा के दू दिन पहिले दू मित्र के बातचीत के संवाद लेखन करऽ।

कमल : नमस्ते सार्थक। कुछ परेशान लगइत हऽ।
सार्थक : नमस्ते कमल। कल गणित के परीक्षा हे अउ कुछ सबाल सोल्भ नञ हो रहल हे।
कमल: अइसन काहे?
सार्थक : जब ऊ चैप्टर इसकुल में पढ़ाय होल हल ,हम बीमार होवे के चलते इसकुल नञ गेलऊँ हल।
कमल : कोय बात नञ , हम समझा देवइत हिअइ। फिन कोय दिक्कत नञ रहत।
सार्थक: बकि तोहर समय तक बेकार हो जइतऽ। तोहरो तो परीक्षा हे।
कमल : ई कइसन बात ? हम दुन्नु पुराना यार। आखिर यारी कउन दिल ला ?
सार्थक : ऊ चैप्टर के सूत्र भी तऽ हमरा इयाद नञ होवे हे।
कमल: सूत्र इयाद करे के नञ समझे के हे। सूत्र कइसे बनल, एकरा समझे के हे। फिन कइसनो सबाल हल हो जइतऽ।
सार्थक: वाह ! यार। तब कीऽ बात ? तब तऽ हम्मर समस्या हल हो जाय। हाँ, अब हमरा समझा दऽ।

**** ****** ****** *****

सबाल (3) किताब खरीदे खातिर छात्र अउर दुकानदार के बातचीत के संवाद लेखन करऽ।

छात्र : नमस्ते अंकल ! हमरा किताब चाही।
दुकानदार: नमस्ते बेटा ! कउन किलास के किताब चाही ?
छात्र : नौवाँ किलास के किताब।
दुकानदार : ठीक हे। देखा , ई हे नौवाँ किलास के किताब के पूरा सेट।
छात्र : बंडल खोल के देखावऽ।
दुकानदार: घर जाके देखिहऽ। किताब खराब होवे पर बदल देवऽ।
छात्र : नञ! इहइँ देखब कि घरे से आबे के जरूरत नञ रहत।
दुकानदार : ठीक हे। बंडल खोल के देखऽ।
छात्र : ई किताब एन0 सी0 आर0 टी0 के नञ हे।
दुकानदार : हाँ ! इहे किताब निम्मन हे।एकरा में उत्तर भी हे। दोसर लेवऽ तऽ गाइड अलग से खरीदे पड़त।
छात्र: हमरा एन0 सी0 आर0 टी0 के किताब चाही। ई किताब के कोय मुकाबला नञ हे।
दुकानदार : तऽ लऽ। एकरा में कॉपी के बंडल भी लेवे पड़त।
छात्र : कोय बात नञ। कॉपी के बंडल भी हमरा चाही।
दुकानदार : टोटल चार हजार पाँच सौ रुपैया लावऽ।
छात्र : ठीक हे। रुप पैसा ले लऽ।धन्यवाद।

***** ****** ******* ******

सबाल (4) विकट जल संकट के बारे मे दू दोस्त के बातचीत पर संवाद लेखन करऽ।

काजल : कुसुम, कल कक्षा मे "जल ही जीवन हे" विषय पर हमरा बोलइ के हे। एकरा पर तोहर की विचार हे।
कुसुम : हम्मर विचार तऽ बिल्कुल साफ हे कि जल के बिना जीवन सम्भव नञ हे।
काजल : इहे तरह हमरो विचार हे। तभियो लोग जल बेवजह भी खर्च काहे करइ हथ ?
कुसुम : बहिन ,इहे तरह चिन्ता के बात हे।प्रधानमंत्री तक हरदम जल संरक्षण अउ ओकर स्वच्छता पर जोर देवऽ हथिन।
काजल : जल के फिजूलखर्ची पर रोक जरूरी हे। एकरा पर कानून बनइ के चाही।
कुसुम: जल अइसही कम होवइत गेल तऽ अगला विश्व युद्ध जल के खातिर होतइ।
काजल : सरकार अउ जनता के सक्रिय सहयोग से विकट जल संकट के निवारण संभव हे।
कुसुम : एकरा ला जागरुकता अभियान चलवऽ पड़त।
काजल : कल हम जल समस्या पर मजबूती से अप्पन विचार रखब।
कुसुम : बिल्कुल रखइ के हे।

***** ****** ******* *******

सबाल (5) बिजली के बार- बार कटे से परेशान दू ठो औरत के बातचीत के संवाद लेखन करऽ।

शोभा : काहे परेशान लगइत हऽ आभा ?
आभा : कीऽ कहियो ? बार- बार कटे बिजली परेशान कइले हे।
शोभा : हमरो तऽ इहे हाल हे। हम भी परेशान हिअइ बिजली के ई हाल हे।
आभा : बिजली नञ रहे हे आज घर मे तनिको - सन पानी नञ हे। बतावऽ, पानी बिन कइसे कउनो काम होवत ?
शोभा : भोरे-भोरे बचवन के तैयार करके इसकुल भेजइ के रहे हे। पानी तो जरूरी हो जाय हे।
आभा : दिनभर ऑफिस से थक के आवऽ अउ इहाँ अलगे परेशानी। पानी हे नञ।
शोभा : हमहुँ बिजली संकट से आजिज हो गेलिअइ। अउ अगला सप्ताह बुतरुअन के परीक्षा शुरु होतइ। फिन ओकर तैयारी कइसे होवत?
आभा: आज बिजली विभाग के ऑफिस चलके शिकायत दर्ज करा देवे के हे।
शोभा : बिल्कुल ठीक बात।हम भी चलब।

****** ******* ******* *****



लेखक के नाम – लालमणि विक्रान्त

माता के नाम – स्व0 शकुन्तला देवी

पिता के नाम – स्व0 वाल्मीकि शास्त्री

गाँव पो० कैथावाँ

जिला – शेखपुरा, प्रान्त : बिहार

जन्म तिथि – 21 –06 – 1954

शिक्षा – स्नातकोत्तर (हिन्दी)

रूचि – अध्ययन ,अध्यापन, लेखन

मगही साहित्य सृजनः

''कर्मयोगी दशरथ मांझी''(खंडकाव्य)
''सोनपरी'' (खंडकाव्य)
''सिद्ध सरहपा'' (प्रबन्धकाव्य)
''चन्द्रगुप्त''(महाकाव्य)
''सुलोचना'' (लमहर कहानी)
''दस मगही कहानी'' (कथा–संग्रह)
''जिनगी के अँगना'' (आत्मकथा)



जिज्ञासा प्रकाशन
ग़ाज़ियाबाद –२०१००२

Available on
amazon.in



Rs.250/-